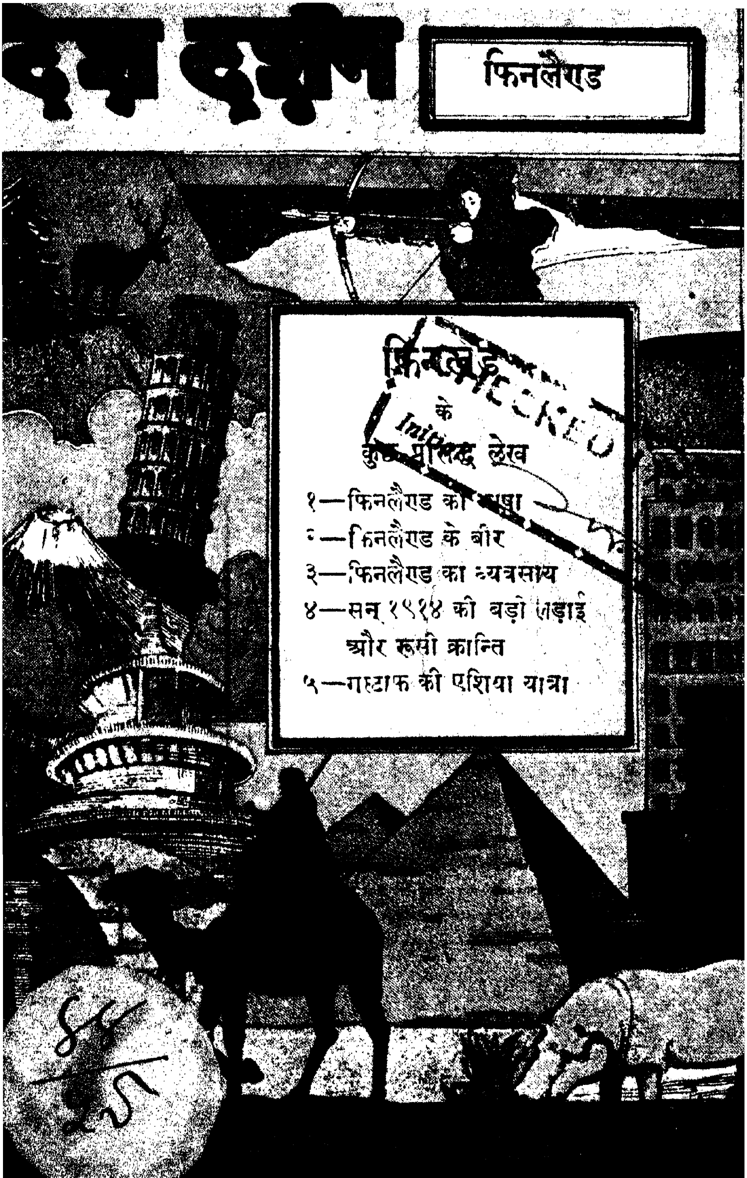

देश दर्शन
फिनलैण्ड
फिनलैण्ड
के
कुछ प्रसिद्ध लेख
१—फिनलैण्ड की भाषा
२—फिनलैण्ड के वीर
३—फिनलैण्ड का व्यवसाय
४—सन् १९१४ की बड़ी लड़ाई और रूसी क्रान्ति
५—गस्टाफ की एशिया यात्रा
CHECKED
Initial

मार्च १९४०] **देश-दर्शन** [फाल्गुन १९९६

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

संख्या १०]

फिनलैंड

[वर्ष १

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
Single copy As. -/6-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
एक प्रति ।=)

विषय-सूची

स्थिति

स्थिति तथा विस्तार

फिनलैण्ड में हज़ारों झीलें पाई जाती हैं। यह देश पहले रूस के आधीन था। ६ दिसम्बर सन् १९१७ को यह देश स्वतंत्र कर दिया गया। फिनलैंड के उत्तर में लैपलैण्ड, पूर्व में रूस, दक्षिण में फिनलैंड की खाड़ी और पश्चिम में बोथनिया की खाड़ी और स्वेडन देश है। उत्तर से दक्षिण तक फिनलैंड की अधिक से अधिक लम्बाई ७०० मील है।

इस देश का क्षेत्रफल १४९,५८८ वर्गमील और जनसंख्या लगभग ४० लाख है। इस देश का ३५ फीसदी जंगल, १२ फीसदी झीलें, ५ फीसदी घास और ३ फीसदी खेती के योग्य भूमि है। लैडेगा, सैमा, काल्ला, पाजाने, नासी जार्वी, पीहा-जार्वी, एनारे, तोरनिया, हौकी आदि यहाँ की बड़ी झीलें हैं। लैडोगा की झील योरुप में सब से बड़ी झील है।

फिनलैंड एक नीचा देश है। इसकी भूमि समुद्र तल से ४०० से ६०० फुट तक ऊँची है। उत्तर की ओर हाल्डित जोक्को की चोटी ४११५ फुट ऊँची है। तटीय

प्रदेश नीचे हैं , मुओनियो, केमी उलिया नामक नदियां फिनलैंड में हैं।

फिनलैंड का प्राकृतिक दृश्य स्कैंडीनेविया की भांति है। यहां कड़ी सरदी पड़ती है। दक्षिण की ओर बाल्टिक सागर के प्रभाव के कारण कुछ कम सरदी रहती है। फिनलैंड में जाड़े की ऋतु बड़ी होती है गरमी की ऋतु २॥ महीने की होती है। बहार और पतझड़ की ऋतुएँ और भी छोटी होती हैं। यहाँ देवदारु, सनोवर, माजूफल और लार्च के बन पाये जाते हैं।

सेमोयीड लोग बतखों का शिकार करते हैं। यह बतख पानी में हजारों और लाखों की संख्या में रहते हैं। सेमोयीड किनारे पर जाल लगा देते हैं और पानी के भीतर (बोटों) पर जाकर इनको भड़काते हैं। यह लोग इतना शोर मचाते हैं कि बतखों का झुण्ड घबड़ा जाता है। अगर वे हिम्मत करके बोटों के बीच अथवा बोटों पर होकर दूसरी ओर चले जाते हैं तो उनकी जान बच जाती है। क्योंकि पानी के अन्दर उनको नहीं पकड़ सकते। यदि एक भी बतख लगे हुये जाल की ओर बढ़ा तो झुण्ड का झुण्ड उसी ओर चला जाता है।

जहाँ से वे बचकर नहीं जा सकते। जाल में फंसाने के बाद सभी बतख उसी समय मार डाले जाते हैं और आपस में बाँट लिये जाते हैं। इनके मांस में नमक मिलाकर जाड़े के लिये सेमोयीड लोग रख लेते हैं। इनका माँस रूसियों के हाथ भी बेचा जाता है। इनके चोंच की माला और दूसरे खिलौने बनाकर सेमोयीड बालक खेलते हैं।

कभी कभी सेमोयीड लोग वस्त्र न होने पर बरफ के भीतर गुफा खोद कर रात व्यतीत करते हैं। वे अपने मुरदों की लाश (मृतक शरीर) को बरफ में गाड़ते हैं और लकड़ी के संदूक भी कब्र के ऊपर गाड़ देते हैं। वहीं पर उसकी स्लेज गाड़ी और टूवर (भाला) भी तोड़ कर रख दिया जाता है। इन लोगों का विश्वास है कि इस प्रकार तोड़ कर रक्खा हुआ सामान भी मृतक के साथ दूसरे लोक चला जाता है और उसके काम आता है।

देश दर्शन

टुण्ड्रा का प्रदेश

अधिकाँश सेमोयीड लोग जो कारा समुद्र के किनारे पर रहते हैं। वे टुँड्रा प्रदेश में गर्मी के केवल कुछ ही महीनों में रहते हैं। जाड़े की ऋतु आते ही वे पश्चिम की ओर पेचोरा प्रान्त में चले जाते हैं।

जाड़े की ऋतु आने के पहले टुण्ड्रा निवासी बैगाज द्वीप से रेन्डियर (ध्रुव प्रदेश के हिरण) पकड़ते हैं। इन रेनडियरों का बड़ा समूह (४ या ५ सौ का) पानी की ओर हाँक कर लाया जाता है और तीन या चार मील लम्बा पानी का मार्ग पार करके हवरोवा स्थान पर लाया जाता है। इन रेनडियरों को हांकते समय कुत्ते भंकते हैं और लोग पीछे चिल्लाते हैं।

अक्टूबर के महीने के आते ही यहाँ के निवासी समूह के समूह चलने लग जाते हैं। यह लोग अपना सारा सामान स्लेज गाड़ियों पर लाद कर ले जाते हैं। चूम (डेरे) को भी स्लेज गाड़ी पर लाद ले जाते हैं। इनके चले जाने के बाद हवरोवा प्रदेश में केवल रूसी

लोगों की झोपड़ियाँ पश्चिम की ओर उजड़ी हुई पड़ी रह जाती हैं।

बैगाज़ द्वीप में जाड़े के मौसिम में भी सभी साथियों के चले जाने पर १५ या २० आदमी रह जाते हैं। यह लोग रीछ, सील मछली, दरयाई घोड़ा और दरयाई गाय का बसंत ऋतु के आरम्भ में शिकार करते हैं।

शीत काल आने के कुछ दिनों बाद ही टुंड्रा और ध्रुव के बीच में स्वेत बरफ का मैदान हो जाता है। इस बड़े मैदान के बीच बीच में कहीं कहीं जलाशय भी होते हैं। बरफ पड़ जाने के बाद ध्रुव प्रदेश के रीछ आते हैं।

टुंड्रा के निवासी बरफ की गहराई का पता लगाने और सील मछली का शिकार करने के लिये एक भाला रखते हैं, इसको वे 'तूर' कहते हैं। यह लोग रेन्डियर का कच्चा मांस खाते हैं। यह लोग अपने चूम के भीतर आग जला कर अपने भीगे हुये कपड़े सुखाते हैं। बहुधा अधिक लकड़ी जलाने पर धुआं बहुत हो जाता है, जिससे उनका दम घुटने लगता है और वे चूक को छोड़ कर बाहर चले जाते हैं।

स्लेज गाड़ियाँ बहुत तेज चलती हैं, किन्तु उन्हें मार्ग में रुकना भी बहुत पड़ता है। टुंड्रा निवासी जब गाड़ियों पर चलते हैं तो बहुत बातें करते चलते हैं। मार्ग में कहीं कहीं पर जहां पानी बहता रहता है वहाँ पर ये गाड़ियाँ बरफ टूट जाने से पानी में धंस जाती हैं। ऐसी दशा में गाड़ियों का सामान उतार कर सेमोयीड लोग गाड़ियों को निकालते हैं। कहीं कहीं पर सेमोयीड लोग नदियों को पार करते हैं। यदि नदी का पानी जमा नहीं रहता तो जब तक जम नहीं जाता तब तक इनको उसके जमने की प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

बरफ जमने के पश्चात् सारा बर्फीला प्रदेश उजाड़ हो जाता है। ग्रीष्म काल की चिड़ियाँ चली जाती हैं, किसी तरह के पशु भी नहीं रहते।

कभी कभी हवा बहुत तेज़ चलती है। सरदी इतनी अधिक पड़ती है कि रेन्डियर का माँस बरफ से जम जाता है। और उसे कुल्हाड़ी से काटना पड़ता है। कभी कभी यह लोग आपस में निमंत्रण करते हैं, जिसमें काटा हुआ माँस भून कर खाने को दिया जाता है। कभी

कभी रेनडियर को भून डाते हैं और उसके पश्चात् उस भूने हुये मांस को खाते हैं।

टुंड्रा के बर्फीले प्रदेश में चलना बड़ा कठिन काम है। वहाँ मार्ग का कहीं पता नहीं चलता। सेमोयीड लोग रात को तारागणों को देख कर अपना मार्ग ढूँढ़ते हैं। यदि कुहरा होता है तो रोशनी होने तक अपने गाड़ियों पर सोते रहते हैं। कभी कभी यह लोग सिवार या काई को खुरचने के बाद मार्ग का पता लगाते हैं। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि वे मार्ग का इस प्रकार कैसे पता लगाते हैं। इस भेद को उनके सिवा और कोई नहीं जानता।

देश दर्शन

लैपलैण्ड

रोवानीमी हेलसिंग फोर्स से ५०० मील की दूरी पर स्थित है। रोवानीमी स्थान लैपलैंड के दक्षिणी सिरे पर और पेट्सामों का बन्दरगाह उत्तरी सिरे पर है। पेट्सामों का बन्दरगाह आर्क्टिक सागर पर है। रोवानीमी से पेट्सामों की दूरी ३०० मील है। गरमी की ऋतु में रोवानीमी से पेट्सामो मोटर-बस द्वारा जाते हैं। और यह लैपलैंड की यात्रा दो दिन में समाप्त होती है। लैपलैंड की इस सड़क के दोनों ओर नदियों की घाटियां और सैकड़ों वर्गमील वन हैं। इन स्थानों पर मनुष्य जाति का कहीं नाम भी नहीं है।

एक जलविभाजक (वाटरशेड) या ऊँची उजाड़ पथरीली ज़मीन इस जंगली प्रदेश को दो भागों में बिभाजित कर देती है। इस ऊँचे प्रदेश के उत्तर की ओर इवालो नदी बहती है। जल विभाजक के उत्तर की ओर इनारी झील है। यह झील उत्तरी लैपलैंड में स्थित है। इनारी झील के उत्तर की ओर एक पहाड़ी बन है। जिसमें होकर राट्सजोकी नदी अपनी तीव्र धाराओं के



साथ बहती है और उत्तरी ध्रुव सागर में जाकर गिरती है।

लैपलैंड के निवासी सड़क के किनारे पर रहते हैं। सड़क के किनारे किनारे खेती होती है। यहाँ पर मोटर-बस द्वारा चिट्ठियां और पत्रिकाएँ लोगों को पहुँचाई जाती हैं। मोटर-बस पर बैठा हुआ पोस्ट मैन (डाकिया) लोगों को मार्ग में चिट्ठियां बांटता जाता है। जब पोस्ट बस आने का समय होता है तो लोग उसकी प्रतीक्षा करते रहते हैं। क्योंकि दुनियां की खबरें उन्हें इसी के द्वारा मालूम होती हैं।

लैपलैंड के निवासी फिन लोग हैं। यह लोग दक्षिण की ओर हट कर उत्तर की ओर लैपलैंड में जा बसे हैं। यह लोग तगड़े, मज़बूत और प्रसन्न चित्त होते हैं। यहाँ के निवासियों का रोज़गार खेती करना, मछली मारना और जंगल में लकड़ी काटना है। यहाँ के बनों में सनोबर, झाऊ और देवदारु के पेड़ पाये जाते हैं। इसके सिवा कई तरह की झाड़ियां भी पाई जाती हैं। ये झाड़ियां १ फुट से ८ फुट तक ऊँची होती हैं। इवालो के समीप एक सुन्दर हरी भरी घाटी है। यह

घाटी उपजाऊ है और यहां पर बस्ती भी अच्छी है। यहां पर लोग दक्षिण फिनलैंड से दूर दूर से काम करने के लिये आते हैं।

ईवानो की बस्ती ईनारी प्रान्त में सबसे बड़ी है। यह बस्ती १७६० ई० में बसाई गई थी। उत्तर की ओर अधिकाँश राई की खेती ईवानो में ही होती है। इस बस्ती में एक सरांय भी बन गई है। यहां पर एक पोस्ट आफिस और कुछ घर लोगों के रहने के लिये बना दिये गये हैं। यह बस्ती रात्सजोकी नदी के किनारे पर है।

रात्सजोकी नदी में मोटर-बोट चलते हैं। यह बहुत सी झीलों से मिल कर बनी है। झीलों के बीच बीच में नदी की धारा तेज़ है। यह नदी नार्वे और फिनलैंड के बीच सीमा बनाती है। इस नदी की चौड़ाई लगभग २०० गज़ है।

सलमिजेरवी की बस्ती एक झील के किनारे बसी है। इस बस्ती से ही सभ्यता का अन्त मालूम होता है। यहां पर एक प्राइमरी स्कूल है।

बेरिस ग्लेब लैपलैंड का एक गाँव है। यहां पर लैप लोगों के घरों के बगल में एक रूसी चर्च टूरिस्ट असोसियेशन, और सीमा प्रदेश के गार्डों के रहने के कमरे हैं। इस गांव के चारों ओर हरी भरी पहाड़ियां हैं। इस गांव में एक सराँय है जो और दूसरे देशों की सरायों की तरह है। इस सराय के रहने वाले बालक फुटबाल तथा दूसरे खेल खेला करते हैं। इस सरांय में सभी प्रकार का प्रबन्ध है।

यहाँ पर गर्मी के दिनों में दिन बहुत बड़ा होता है। रात का पता ही नहीं चलता। यदि यहां पर यात्री लोग ध्यान न दें तो उन्हें सोने (शयन करने) की याद नहीं आती है। जाड़े के दिनों में रात बहुत बड़ी होती है। ६ सप्ताह तक सूर्य देव क्षितिज के ऊपर नहीं आते। दो तीन महीने तक दिन बहुत छोटे होते हैं। इसके चारों ओर झीलों और पहाड़ियों पर बरफ जमी रहती है।

लैप लोगों की कई जातियां होती हैं। उनके रहन सहन का तरीका भी भिन्न होता है। कुछ लैप लोग रेन्डियरों के झुन्ड रखते हैं और उनसे उनको माँस दूध और गर्म खाल मिलती है। गर्मी की ऋतु में यह

देश दर्शन

रेन्डियर पहाड़ी प्रदेश में स्वतंत्रता पूर्वक घूमा करते हैं। और कुछ अपने मकान बनाकर गाँवों में रहते हैं। इन लोगों को गर्मी का पहचान अजीब होता है। इनका कुर्ता नीले रंग का होता है। उसमें लाल और पीला गोट लगा रहता है। इनकी चौकोनी लम्बी हैट होती है। बोरिस ग्लोब के निवासी स्कोल्टलैप जाति के हैं। यह लोग मछली का शिकार करते हैं। इनके झोपड़े ऊँचे स्थान पर लट्ठों के ऊपर बने होते हैं।

अधिकाँश लैप लोग दो या तीन प्रकार की भाषाएँ बोलते हैं। इनके झोपड़े बड़े छोटे होते हैं। लकड़ी के बक्सों के ऊपर ये लोग सोया करते हैं। लैप स्त्रियाँ अपने झोपड़ों में चरखे से ऊन काता करतो हैं। ये लोग बैर का सुन्दर मुरब्बा बनाती हैं।



फिनलैण्ड का ग्रीष्म काल

ग्रीष्म काल के आते ही बरफ पिघलने लगती है। वृक्षों में नई नई कोपलें निकलने लगती हैं। नदियों में पानी की बाढ़ आ जाती है, जिससे उसके किनारे साफ हो जाते हैं। नदियों के तटों पर कीचड़ तथा दलदल हो जाती है। हज़ारों प्रकार के कीड़े-मकोड़े और पिस्सू पैदा हो जाते हैं। ये मसे कई प्रकार के होते हैं। कोई कोई तो बहुत बड़े होते हैं। ग्रीष्म ऋतु में मसों की एक नई दुनिया बन जाती है। घर में, बाहर पहाड़ों पर जहाँ कहीं जाइये, मसों का झुंड दिखाई पड़ता है।

उत्तर की ओर फिन लोग खेती करते हैं। लैपलैण्ड को कोई सीमा नहीं है। वरानगर के कुछ सौ मील दक्षिण की ओर दलदली स्थानों पर रेनडियर नहीं दिखलाई पड़ते। लैप लोग बड़े गन्दे रहते हैं। वे मछलियों का शिकार करते हैं। लैप लोग अपने को मच्छड़ों से बचाने के लिये गन्धापिरोजा का कोट गर्मी की ऋतु में पहनते हैं। फिर भी पिस्सू इन्हें घायल करते ही रहते हैं। फिन किसान बेचारे इन पिस्सू तथा मच्छरों

की चोट से घायल होते हुए भी अपने काम में लगे रहते हैं।

फिन लोग दो बजे सबेरे उठते हैं और दस बजे रात को सोते हैं। गर्मी के चार महीनों में ही उन्हें अपने खेतों को जोतना, बोना और काटना पड़ता है। उत्तर की ओर सूर्य रात दिन चमकता रहता है और दक्षिण की ओर एक या दो घंटे आराम के लिये रात को मिलते हैं। जाड़े के दिनों में यहाँ के निवासियों को फ़ुर्सत रहती है।

प्रातःकाल सवेरे लड़के तथा लड़कियाँ अपने अपने कामों में लग जाते हैं। पहले लड़के आग जलाते हैं, आग जलते ही गायें आग के समीप धुएँ में आप ही आप आकर खड़ी हो जाती हैं। लड़कियाँ बालटियों में उनका दूध दुह लेती हैं। धुएँ के कारण मच्छड़ गायों के समीप नहीं आते और उन्हें थोड़ी देर के लिये इन मच्छड़ों से फ़ुर्सत मिल जाती है। एक एक खेत में लगभग १२ स्थानों पर इसी प्रकार आग जलती हुई सवेरे-शाम दिखाई पड़ती है।

फिनलैण्ड में दिन के समय घर के सभी प्राणी

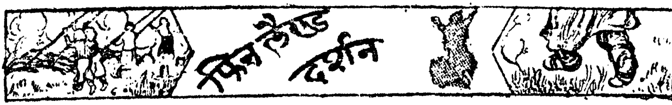
काम में लग जाते हैं। पाँच पाँच साल की छोटी लड़कियाँ भोजन बनाने में सहायता देती हैं। वे आलू छील कर उसकी कचौड़ी तथा समूसे बनाती हैं।

देहात का भोजन बहुत सीधा सादा होता है। दोपहर को एक बजे जब घंटा बजता है तो काम करने वाले मज़दूर अपने भोजनालय में एक लम्बी मेज़ पर आ बैठते हैं। उनके सामने राई की एक बड़ी रोटी रक्खी जाती है। सभी लोग अपने चाकुओं से उस बड़ी रोटी से अपना अपना भाग काट लेते हैं। यह रोटी सुखाई हुई होती है और बहुत कड़ी रहती है। बनाने के बाद धूप या आग के ऊपर लटका कर यह रोटी खूब सुखा ली जाती है। खाने में खट्टी मालूम होती है। दही, मट्ठा और दूध भी यह लोग भोजन में प्रयोग करते हैं। आलू की तरकारी और बासी नमक मिली हुई कच्ची मछली भी यह लोग खाते हैं।

फिनलैण्ड के घरों में पत्थर की भट्टी रहती है। इस भट्टी में चिमनी लगी रहती है जिसके द्वारा धुआँ बाहर निकलता रहता है। भट्टी की मज़बूत मोटी दीवारें गरम होने पर कमरे को गरम करती हैं। भट्टी के अन्दर

लकड़ी जलाई जाती है। बड़ी भट्टी के समीप ही भोजन बनाने की भी भट्टी रहती है।

फिनलैण्ड में लोग घरों में चरखा तथा करघा चलाते हैं और उनके द्वारा ऊन कात कर कपड़े बुनते हैं। वे अपने हाथ के बुने हुए कपड़े पहनते हैं। फिन लोग बेल बूटे भी अच्छे बनाना जानते हैं। यहाँ के निवासी स्त्री और मर्द दोनों सुन्दर चमकीले अपने हाथों के बनाये कपड़े पहनते हैं। यह लोग नीचे के कपड़े (बनयाइन आदि) बहुत संख्या में रखते हैं। जाड़े में उन्हें कपड़ा धोने का मौक़ा नहीं मिलता, क्योंकि सब कहीं पानी जम जाता है। बसन्त आने पर सभी लोग अपने अपने कपड़े साफ करते हैं। फिनलैण्ड में बसन्त आने पर उत्सव मनाया जाता है। लोग जगह जगह पर सुन्दर सुरीले गाने गाते हुए दिखाई पड़ते हैं। किसान लोग अपने अपने खेतों में सवेरे शाम गाने जाते हैं।



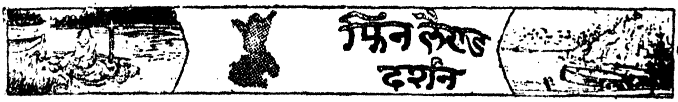
भाषा

फिनिश भाषा के शब्दों का उच्चारण कठिन नहीं है। इसके स्वर तथा व्यञ्जन अक्षर के उच्चारण स्थायी होते हैं। उच्चारण के समय पहले शब्दांश पर अधिक ज़ोर दिया जाता है। छोटे स्वरों को एक स्वर से और लम्बे स्वरों को दो स्वरों द्वारा प्रकट किया जाता है। अ, इ, उ और ए का उच्चारण हिन्दी भाषा की भाँति ही किया जाता है। ज़ शब्द का उच्चारण य की भाँति किया जाता है।

कुछ शब्दावली

हिन्दी	फिनिश
१—तुमको धन्यवाद है	कीट्स
२—हाँ	क्युल्ले
३—नहीं	एइ
४—रेलवे	रऊटाटिए
५—ट्रेन	यूना
६—स्टेशन	असेमा
७—जहाज़	लैवा

८—होटल	होटेल्ली
९—क़हवा	क़ाहवी
१०—चीनी	सुकेरी
११—भूमि	माँ
१२—समुद्र	मेरी
१३—पानी	वेसी
१४—एक	युक्सी
१५—दो	कक्सी
१६—सौ	सत
१७—टिकट	मस कलिप्पू, पिलेट्टी
१८—कब	मिल्लोइन
१९—मिस्टर (श्रीमान्)	हेरी
२०—श्रीमती	रूव



फिनलैण्ड के वीर

हमारे देश की तरह फिनलैंड में भी प्राचीन सूरमाओं और देवताओं की कहानियाँ प्रचलित हैं 'केलेवाला' (सूरमाओं का देश) नामक पुस्तक में फिनलैंड के बहादुरों और देवताओं की कहानियाँ इकट्ठी की गई हैं। यहाँ पर हम उसी पुस्तक की एक कहानी देते हैं।

लेम्मिन कैनेन की कहानी--किसी समय में फिनलैंड में एक चतुर स्त्री रहती थी। उसके एक अद्भुत पुत्र था, जिसका नाम लेम्मिन कैनेन था। लेम्मिन कैनेन ने बहुत सी लड़ाइयाँ लड़ी और वह देश का एक सूरमा कहलाने लगा।

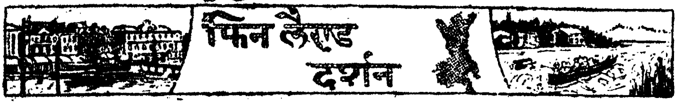
उसी समय उत्तर की ओर पोहियोला देश की राजकुमारी की सुन्दरता की कीर्त्ति चारों ओर फैल रही थी। वह राजकुमारी चाँदी और सोने के वस्त्र पहिन कर इन्द्र धनुष पर बैठा करती थी और चिड़ियों के साथ गाना गाया करती थी। उससे शादी करने के लिये बड़े बड़े राजकुमार जब आते थे तो वह उन्हें कठिन से कठिन

कार्य करने को कहती थी। कार्य को पूरा कर लेने पर भी वह किसी से ब्याह न करती थी।

लेम्मिन कैनेन ने भी उस राजकुमारी से ब्याह करने का इरादा किया और अपनी तलवार तथा भाला लेकर तयार हुआ। उसकी माँ ने उसे मना किया कि पोहयोला देश जादू का है और राजकुमारी की माँ लोयुही एक बड़ी जादूगरनी है, तू वहाँ से जीता बच कर नहीं आ सकता। कैनेन ने जवाब दिया कि मैं अपने जादू से सब को जीत लूँगा। जब उसकी माँ ने न माना तो उसने अपने सिर का बाल उखाड़ कर अपनी माँ को दिया और कहा कि जब बाल से खून बहे तभी जानना कि मेरे ऊपर संकट पड़ा है।

इसके बाद वह अपनी घोड़ी पर सवार होकर पोहयोला देश की ओर रवाना हुआ।

तीन दिन के पश्चात् वह पोहयोला देश में पहुँचा। पहले पहल द्वार पर उसे कुत्ता पहरेदार मिला जो आदमियों का खून पीता था। कैनेन ने दूर ही से जादू पढ़ना आरम्भ किया, इसलिये कुत्ते ने कैनेन को नहीं रोका और वह चला गया।



कैनेन अपना छोटा रूप धारण करके भीतर घुस गया, जहाँ वह अपने जादूगरों के बीच बैठी जादू के गाने सुन रही थी। वहाँ पहुँचते ही कैनेन ने अपना पूरा भेष धारण कर लिया और अधिक शक्तिशाली जादू के गाने गाने लगा। कैनेन के जादू के कारण सभी जादूगर भाग गये। वहाँ पर एक बूढ़े जादूगर को कैनेन ने अपनी लीला दिखाने के लिये बाकी छोड़ा और उससे सारा हाल कह भी दिया। वह बूढ़ा उठ कर टुओनी नदी (मृत्यु देश की नदी) के किनारे चला गया और बदला लेने की राह देखने लगा।

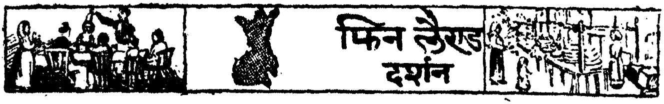
कैनेन ने लोयुही से राजकुमारी माँगा। लोयुही ने कहा कि 'हिसी' के बन से जंगली रेनडियर ले आ। कैनेन ने सब से ज्यादा तेज़ बरफ पर दौड़ने वाला जूता बनाया और रेनडियर के लिये रवाना हुआ। उसने रेनडियर को पकड़ लिया और चढ़ना चाहा किन्तु वह भाग निकला। उसी समय कैनेन का तेज़ दौड़ने वाला जूता भी टूट गया। हताश होकर कैनेन ने जादू पढ़ना आरम्भ किया, उसके जादू के प्रभाव से रेन्डियर उसी स्थान पर फिर आगया और कैनेन उसे लेकर

लोयुही के पास आया। लोयुही ने उससे 'हिसी का घोड़ा' लाने को कहा जो आग खाता और साँस लेता था।

कैनेन ने तूफान और बादलों की सहायता से वह घोड़ा भी लाकर लोयुही को दिया। तब लोयुही ने कहा कि एक बाण से तुम 'टाउनी नदी के हंस' को मार कर ले आओ तो अपनी पुत्री तुम्हें दूँ।

कैनेन उस हंस के लिये टाउनी नदी की ओर रवाना हुआ। टाउनी नदी के किनारे वही बूढ़ा जादूगर अपना बदला कैनेन से चुकाने के लिये बैठा था जिसको कैनेन ने लामुही के महल से निकाल दिया था। जैसे ही कैनेन के आने की आहट उस जादूगर ने पाई, वैसे ही एक साँप को उसने नदी की तह से रवाना किया और वह साँप कैनेन के हृदय में जा लगा। साँप ने कैनेन के हृदय में डस लिया, जिसके कारण वह बेहोश होकर पानी में गिर पड़ा और पानी में भँवर के भीतर चला गया।

ठीक उसी समय कैनेन की माँ ने देखा कि उसके पुत्र के दिये हुए सिर के बाल से खून की लाल बूँदें निकल रही हैं।



कैनेन की माँ सीधी दौड़ी हुई पोहियोला पहुंची और लामुही से अपने पुत्र के बारे में पूछा। लामुही ने उत्तर दिया कि वह टाऊनी नदी में हंस लेने के लिये गया है।

कैनेन की माँ वृक्षों, मार्गों, तारों और चन्द्रमा आदि से अपने पुत्र के बारे में पूछती गई, किन्तु किसी ने भी ठीक पता न बताया अन्त में सूर्य देव ने उसके ऊपर कृपा की और कहा कि तेरा पुत्र टाउनी नदी की तह में मरा पड़ा है।

कैनेन की माँ ने एक बड़ा साँचा बनाया जिसके दाँत ६०० फुट लम्बे थे। उस साँचे का हैन्डिल (हाथ से पकड़ने का स्थान) ३०० फुट लम्बा था। उस बड़े अस्त्र द्वारा उसने कैनेन की लाश निकाली और उसमें प्राण लाने का प्रयत्न करने लगी।

कैनेन की माँ ने मधुमक्खी की सहायता से जंगल के पुष्पों के रस से जादू की मधु तयार कराई। उसके द्वारा कैनेन के सभी घाव पुर गये, किन्तु जान न आई। उसकी माँ ने मधुमक्खी द्वारा सात-समुद्र पार से जादू के द्वीप से मधु मंगाया किन्तु उससे भी जान न आई।

तो कैनेन की मां ने मधुमक्खी से सातवें आकाश पर जाकर गोल्डन किङ्ग (स्वर्ण राजा) की मधु लाने को कहा। मक्खी उड़ी और चन्द्र लोक, सूर्य लोक, तारा गणों के लोक होती हुई स्वर्ण राजा के राज्य में पहुंची। वहां उसने जीवन तथा प्रसन्नता प्रदान करने वाली मधु देख उसे लेकर मधुमक्खी नदी के किनारे आई।

कैनेन की माँ ने पहले उसे स्वयं चक्खा और उसके पश्चात् अपने पुत्र की जबान, नाक, कान, हृदय और आंखों में लगाया। स्वर्ण मधु के स्पर्श होते ही कैनेन में जान आ गई और वह उठ बैठा।

कैनेन पहले से भी अधिक नौजवान फुर्तीला और जादूगर हो गया।

सेमोयीड लोगों के घर

सेमोयीड लोग आर्किटक प्रदेश के निवासी हैं। यह लोग लैप लोगों की भांति डेरों में रहते हैं। इनकी आंखें छोटी और बाल सीधे और काले होते हैं। इनकी आंखें तथा बाल चीनी लोगों से मिलते जुलते हैं। यह लोग अपने डेरों और रेनडियरों (हिरणों) को लिये टुंड्रा प्रदेश में इधर उधर घूमा करते हैं।

यहाँ के रेन्डियर नार्वे के रेन्डियर से छोटे होते हैं। गाड़ी में यह पांच पांच एक साथ जोते जाते हैं। रेन्डियर अपने सिर ऐसे ढंग से रखते हैं कि उनकी सींगें एक दूसरे में फंसने नहीं पातीं। सेमोयीड लोगों की 'स्ली' (गाड़ी) लैप लोगों से भिन्न होती है। यह अधिक आराम देने वाली होती है। इनकी गाड़ी अधिक लम्बी और ऊँची होती है। इन गाड़ियों की चौड़ाई लगभग एक गज़ होती है। सामान लादने वाली गाड़ियों को यह लोग आर्की-हान और मामूली को हान कहते हैं। सामान लादने वाली गाड़ियां अधिक लम्बी होती हैं।

अडलियोर गाड़ियाँ बहुत हल्की होती हैं। उसमें बहुत से रेन्डियर जोते जाते हैं। यह गाड़ी फुर्ती

के कामों में प्रयोग की जाती है। इस गाड़ी में चलने वाले रेनडियर डेरों के समीप बंधे रहते हैं। सेमोयीड लोग डेरों को म्यामा चूम कहते हैं।

यह लोग तीस या चालीस लम्बे लट्ठे लेकर एक साथ सील मछली या रेनडियर की खाल की पट्टी से बांध देते हैं, यही उनके तम्बू का ऊपरी सिरा होता है। वे लोग देवदार की छाल को रेनडियर की खाल से सीते हैं और इस प्रकार लगभग एक गज़ चौड़ी बड़ी चादर बना लेते हैं। इसको वे ज़मीन पर लट्ठों के चारों ओर लगा देते हैं। इसी प्रकार एक के ऊपर दूसरी चादरें लगाते हुये ऊपर के सिरे तक चले जाते हैं। ऊपर सिरे पर वे एक छेद धुआं निकलने के लिये रखते हैं। छाल इस प्रकार खींच कर तान दी जाती है कि पानी उसके भीतर प्रवेश नहीं कर सकता। सेमोयीड लोग अपने चूम (डेरे) ऊँचे तथा बलुए स्थान पर बनाते हैं जिससे पानी नीचे बह जाता है और जमीन में भिद जाता है। ऊँचे स्थानों से यह लोग अपने रेनडियरों को भी भली प्रकार देख सकते हैं, जो दूर दूर स्थानों पर चरते रहते हैं।

***

चूम (डेरे) का भीतरी भाग

सेमोयीड लोगों के चूम (डेरे) में बहुत सामान नहीं होता है। उनमें कुछ खालों की चटाइयां, एक या दो मेज़, और आटा रखने के लिये एक बर्तन होता है। उनके पास एक लकड़ी का संदूक होता है जिसमें वे अपना खजाना रखते हैं। दो कड़ाहियां होती हैं जिसमें वे मांस बनाते और चरबी निकालते हैं। एक बर्तन पानी उबालने के लिये और कुछ बर्तन भोजन बनाने के लिये होते हैं। ये सभी सामान एक बड़े लट्ठे में खूंटियों पर लटके रहते हैं।

सेमोयीड लोगों के पास सामान बहुत कम होता है। वे अपने सामानों को अपने मित्र की भांति समझते हैं और उनसे बातें करते हैं। यदि घड़े में पानी नहीं होता तो वे कहते हैं कि यूड (घड़ा या बर्तन) पानी चाहता है और यदि आग धीमी पड़ जाती है तो कहते हैं कि टू (आग) लकड़ी चाहती है।

सेमोयीड लोग अपने सभी बर्तन आग के ऊपर टांगते हैं उनका केवल ठंडे पानी का घड़ा ही अलग

रक्खा रहता है। समोयद स्त्री को उस्तीनिया और मर्द को उआनो कहते हैं। जब उस्तीनिया उआनो के ऊपर नाराज़ होती है तो वह ठंडे पानी का घड़ा उसके पास लाकर रख देती है और वह थोड़ा सा पानी लेकर अपने मुँह पर रगड़ लेता है। यही उसका स्नान करना है। जब कभी उआनो बाहर रहता है या देर करके घर लौटता है और घर पर लकड़ी नहीं रहती तो भी उसकी स्त्री उसके सामने ठंडे पानी का घड़ा रख देती है। कहने का तात्पर्य यह है कि सेमोयीड लोग स्नान करना पसंद नहीं करते। वे स्नान करना एक प्रकार की सज़ा समझते हैं।

टुण्ड्रा का जीवन ही ऐसा होता है जहां नहाने की अधिक इच्छा नहीं होती। सेमोयीड लोग गंदे रहते हैं।

टू (आग) जलाने के लिये सेमोयीड लोग लकड़ी समुद्र के किनारे से लाते हैं। उनके देश में वृक्ष नहीं होते केवल छोटी छोटी झाड़ियाँ होती हैं। यह झाड़ियाँ जलाने के काम नहीं आ सकतीं। सेमोयीड लोग समुद्र के किनारे पर जाते हैं और वहाँ पर बड़े बड़े लट्ठे तथा

देवदार की छाल और टहनियाँ पड़ी रहती हैं, उसी को लाकर वे अपने काम में लाते हैं। यद्यपि यह लकड़ी गीली होती है तो भी ज़रा सी चिनगारी पाकर जलने लगती है।

चौदह साल के ऊपर की लड़कियों को अंका और उससे छोटी लड़कियों को टीर्रत्सो कहते हैं। सेमोयीड लड़के बालक तथा बालिकाएँ बालपन से ही कुल्हाड़ी का प्रयोग करना जानते हैं। वे लकड़ी चीरने का काम करते हैं। सभी सेमोयीड अपने कमर में एक चाकू सदैव लटकाए रखते हैं।

उस्तीनिया रोटी को 'रिस्का' कहती है। वह आटे को गूंध कर रीस्का (रोटी) बनाती है। बासी गूंधे हुये आटे की वह रोटी बनाती है और ताजा आटा दूसरी बार के लिये रख देती है। रोटी बड़ी और मोटी बनाई जाती है। भट्ठी उसके पास नहीं होती इसलिये लकड़ी गाड़ कर उसके ऊपर रोटी रख कर आग में सेंकी जाती है। इस प्रकार रोटी सेंकने में धुंआ लग जाता है। किन्तु उनको इसको तनिक भी परवाह नहीं होती।

सेमोयीड लोग रोटी खाना भोग विलास की चीज़ समझते हैं। यह लोग रेन्डियर अथवा चिड़ियों का मांस खाकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं। जिस में माँस उबाला जाता है उसे सेमोयीड लोग 'यूड' कहते हैं। माँस को उबाल कर एक स्टूल पर परोस दिया जाता है और सभी उसे लेकर खाते हैं। उच्च श्रेणी वाले चूमों (डेरों) में लकड़ी के प्याले रखते हैं और उसी में मांस खाया जाता है।

माँस के बचे हुये रस में जौ का आटा मिला कर शोरवा बनाते हैं और उसे एक बड़े कठौते में परोसते हैं। सभी लोग अपने अपने लकड़ी के चम्मचों से उस शोरवे को खाते हैं।

रूसी लोग आटा ले जाकर सेमोयीड लोगों के हाथ बेचते हैं। प्रत्येक सेमोयीड साल भर के लिये इकट्ठा आटा खरीद लेता है। सेमोयीड लोग आटे का दाम शिकार की वस्तुओं से चुकाते हैं।

सेमोयीड लोग रेन्डियर का दूध नहीं पीते हैं। लैप लोग रेन्डियर के दूध का प्रयोग करते हैं। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि यह दोनों जातियां एक ही

प्रदेश में रहती हैं और रेन्डियर दोनों का प्रधान पशु है तो भी सेमोयीड लोग रेन्डियर का दूध नहीं पीते।

सेमोयीड लोग चिड़ियों के अंडों की चाय पीते हैं। पानी को बर्तन में उबालते हैं और उसी में किसी चिड़िये का अंडा मिला देते हैं। यह चाय अच्छी तो नहीं होती किन्तु शक्तिप्रद होती है।

सेमोयीड लोग सवेरे, दोपहर और शाम तीन समय भोजन करते हैं। सवेरे उठते ही ओरटोव (सवेरे का भोजन) खाते हैं। दोपहर के भोजन याली रनिया ज़ीन्डो और शाम के भोजन को ज़ोन्डो कहते हैं।

उआनो, उस्तीनिया और उसके बच्चे सभी एक बड़ी खाल बिछा लेते हैं और एक खाल ऊपर डाल कर सो जाते हैं। यदि कोई मेहमान आ जाता है तो उसे भी उसी पर सुला लेते हैं। यह सभी उसके अन्दर एक गट्ठर सा बन जाते हैं। बड़े बड़े तूफान तथा आंधियाँ आती हैं, किन्तु सोने वाले मौज की नींद लेते रहते हैं।

सेमोयीड लोग चूम के ऊपर लकड़ी का एक स्थान बनाए रखते हैं जहां पर वे अपने मेहमान तथा जिसका अधिक आदर करना चाहते हैं, उसे बैठाते हैं।

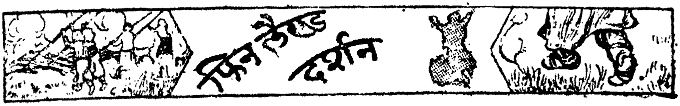
सेमोयीड बालक

सेमोयीड बालकों को मेकोल्का कहते हैं। मेकोल्का बालक स्कूल में पढ़ने नहीं जाते हैं। उच्च श्रेणी वाले लड़के अवश्य ही कुछ थोड़ा बहुत स्कूलों में पढ़ लेते हैं, क्योंकि जाड़े के दिनों में उनका परिवार छोटे नगरों या गाँवों में चला आता है। ये बालक रूसी लोगों से कुछ पढ़ना लिखना अवश्य सीख लेते हैं।

ये बालक अच्छे सांचे और नमूने बनाना जानते हैं। रेन्डियर के सींगों के यह लोग चाकू के हैंडिल (हत्थे) बनाते हैं और उसपर सुन्दर बेल बूटे काढ़ते हैं। रेन्डियर प्रत्येक बसन्त ऋतु में अपने पुराने सींग छोड़ते और नई सींग धारण करते हैं। इन्हीं सींगों का प्रयोग ये सेमोयीड बालक करते हैं।

इन सींगों में गढ़े बना बना कर एक प्रकार की स्वेत धात उसमें पिघला कर डाल देते हैं और फिर बाल से साफ कर डालते हैं। ये लोग लकड़ी के साँचे बना कर उसमें इसी धात की बटन और मुँदरियां भी बनाते हैं।

ये बालक चाकुओं के हैंडिल इतने सुन्दर बनाते हैं कि रूसी सौदागर उन्हें तम्बाकू और सुङ्घनी देकर उनसे चाकुओं के हैंडिल बदल ले जाते हैं।



सेमोयीड बालक स्ली गाड़ियां अपने हाथों बना लेते हैं। दिजहा (स्लो) रेन्डियरों के सींगों के ऊपर फेंक कर वह उन्हें पकड़ लेते हैं और फिर अपनी गाड़ियों को हवा की भांति तेज ले जाते हैं। वे खाई खंदकों को भी बड़ी सरलता पूर्वक पार कर जाते हैं।

जब ये बालक अपनी स्ली गाड़ी को हाँकते रहते हैं तो अडलियूगो शब्द का उच्चारण करते रहते हैं। ये बालक रेन्डियर की खाल का कपड़ा पहनते हैं, जिसके भोतर की ओर समूर के बाल लगे रहते हैं। अपने पैरों में वे पिम्मीज़ पहनते हैं। यह सील मछली की खाल के बनाये जाते हैं। कुछ बालक सोवीक (ओवर-कोट) भी पहनते हैं। ये बालक जब अपने रेन्डियरों को धरने के लिये छोड़ते हैं तो अपनी गाड़ी पर ही कपड़े पहने सो जाते हैं।

टुण्ड्रा की जलवायु ऐसी होती है कि वहां अजनबी को बड़ा धोखा हो जाता है। सेमोयीड बालक कभी धोका नहीं खाते वे चिड़ियों के अंडे निकाल कर ले आते हैं और अपने भोजन के लिये प्रयोग करते हैं। टुण्ड्रा की चिडिया अपने घोंसले जमीन पर टहनियों से बनाती हैं।

—:o❀o:—

देश दर्शन

फिनलैण्ड के मुख्य जानवर

फिनलैण्ड के उत्तरी प्रदेश का मुख्य जानवर रेन्डियर है। यह स्ली (बरफ पर चलने वाली बे पहिये की गाड़ी) गाड़ियों में जोता जाता है। इसका मांस भी यहां के निवासी खाते हैं। इस के चमड़े से वे डेरा और कपड़े बनाते हैं। यह जानवर बरफ़ को खुरच कर एक प्रकार की काई को खाकर जीवित रहता है। यह स्ली गाड़ी को हवा की भांति बरफ पर तेज़ी से खींचता है। यह जानवर बड़ा चतुर होता है और अपने मालिक से बड़ा प्रेम रखता है।

पौलरबियर (ध्रुव प्रदेश का रीछ) :—यह रीछ ध्रुव प्रदेश में पाया जाता है। यह सफेद रंग का होता है। इस की खाल कपड़े बनाने के काम आती है और बड़ी गरम होती है। इस के बाल लम्बे सफेद और चमकदार होते हैं। फिनलैण्ड के कुछ निवासी (सेमोयीड) इस का शिकार करते हैं और इसके चमड़े को दूसरों के हाथों बेचते हैं। यह रीछ सेमोयीड लोगों के चूम की ओर भोजन की खोज में जाता है। मार्ग में

यह सूंघता जाता है। मार्ग सूंघने से उसे जाने वाले व्यक्ति की आहट मिल जाती है। यह रीछ बड़ा भयानक होता है और इस से सभी जानवर डरा करते हैं। यह रीछ पानी में बड़ी फुर्ती के साथ तैर सकता है। यह देखने में बड़ा सुन्दर मालूम होता है और बर्फ़ीली चट्टानों के बीच में रहा करता है। जब इसको किसी प्रकार की आहट मालूम होती है तो अपना सफेद सिर ऊपर उठा कर आने वाले की ओर देखने लगता है।

फिनलैण्ड के उत्तरी प्रदेश में भूरे रंग का भी एक रीछ होता है। इस को वहाँ के निवासी ब्रून कहते हैं। यह रीछ गरमी के दिनों में फल तथा जड़ें खाकर मोटा हो जाता है और फिर जाड़े भर पड़ा सोता रहता है। गरमी के दिनों में जब वह घूमता रहता है तो पहाड़ी चट्टानों के बीच अपने रहने का स्थान भी खोजता रहता है। ब्रून हवा को सूंघ कर ही शिकारी का पता लगा लेता है। जब जाड़े की ऋतु आती है तो वह अपने रहने के लिये ज़मीन के अन्दर बड़ी मांद बनाता है या किसी बड़े पेड़ के तने में छिप जाता है। अपनी मांद में छिपने के पहिले वह कई दिनों तक चारों ओर अपनी

माँद का चक्कर लगाता रहता है कि कोई व्यक्ति उस की ताक में तो नहीं है। अगर उसे ज़रा भी आहट मालूम होती है तो वह भाग जाता है। ब्रून भागने में बड़ा तेज़ होता है और उसे कोई शिकारी पकड़ नहीं सकता।

ब्रून ऋतु का बड़ा ज्ञान रखता है। जब बरफ का तूफान आने को होता है या बरफ गिरने को होती है तो वह पहले ही अपनी मांद के बाहर हो जाता है जिससे बरफ के नीचे दब न जावे।

फिन लोग भी इन का पता लगाते रहते हैं क्योंकि इसकी खाल मूल्यवान होती है। इस का मांस भी खाया जाता है और इस के मारने वाले को सरकार की ओर से इनाम भी मिलता है। फिन लोग इस का पीछा करते हैं और जहां पर यह जाकर रुकता है वहां जाकर चिन्ह बना देते हैं बसंत ऋतु आने पर वे अपने साथियों और कुत्तों के साथ जाते हैं और उस की खोज करते हैं। ढूंढ़ने पर उन्हें कुछ चट्टानों और पेड़ों के बीच बरफ जमी हुई मिलती है उस जगह वे शक करते हैं कि रीछ सोता है। वे मांद में सोते हुये रीछ को जगाने के लिये शोर मचाते और बन्दूक की आवाज़ करते हैं। उसकी

मांद के ऊपर आग जलाते हैं, जिससे धुवां के कारण वह जाग कर बाहर निकलता है।

यह रीछ महीनों पड़ा सोता रहता है। जब आवाज़ पाकर जागता है तो अपने बचाव की तरकीब सोचता है। उसे जागने पर भूक भी बहुत लगती है। उसे अपनी फुर्ती पर विश्वास होता है। जब शिकारी दो चार फैर उस की मांद पर करते हैं तो वह बाहर निकलता है और बड़े ज़ोरों के साथ गरजता है। उस की आवाज़ बड़ी भयानक होती है। वह इतना भूका होता है कि एकबारगी अपने शिकार पर टूट पड़ने की कोशिश करता है। कुत्ते डर के मारे उसके समीप नहीं जाते। गरजने पर उसके ऊपर गोलियां चलने लगती हैं। चोट खाने पर वह और भी भयानक हो जाता है। कुत्ते उसे चोट खाया हुआ जान उसके समीप आते हैं, किन्तु वह उन्हें पकड़ पकड़ कर घायल करता और बरफ की चट्टानों पर फेंक देता है वह अपने बैरी शिकारी के ऊपर भी आक्रमण करने की कोशिश करता है किन्तु मार्ग ही में गोली खाकर गिर जाता है।

फिन लोग उसे स्ली पर लाद कर घर ले आते हैं वे

उसके मांस को खाते हैं, चमड़े को बेंचते हैं और सरकार से उसे मारने के बदले इनाम लेते हैं।

लोमड़ी भी इस प्रदेश का प्रधान जानवर है। यह बड़ा चतुर जानवर होता है। सेमोयीड लोगों की भांति यह भी बतखों और मुरग़ाबियों का शिकार करता है। यह अपने जाड़े के लिये उन्हें मार कर अपनी मांद में रख लेता है। इसके बड़े बड़े झुंड होते हैं और इससे चिड़ियां बहुत परेशान होती हैं। इसकी खाल बड़ी गरम होती है और वस्त्र बनाने के काम आती है।

बालरस (ध्रुव प्रदेश का हाथी) भी इस प्रदेश में पाया जाता है। हाथी के जैसे दांत इसके भी होते हैं। यह जानवर रीछ से नहीं डरता और जब रीछ का शिकार किया जाता है तो बड़े आनन्द के साथ उसे खड़ा खड़ा देखता रहता है। यह अपने बच्चों को भी लाकर वह तमाशा दिखवाता है।

ये जानवर गोल में एक साथ रहते हैं। यह पानी के अन्दर रहते हैं और पानी के ऊपर जमी हुई बरफ को तोड़ कर ऊपर सिर निकाल कर देखा करते हैं। तीन बार अपना सिर निकालने के बाद ये अपने निश्चित

स्थान पर जाते हैं। इनका शिकार भी फिन लोग करते हैं। वे इन का मांस खाते हैं; चरबी जलाते हैं और चमड़े से वस्त्र का काम लेते हैं। यह जानवर जब एक दूसरे के पास रहते हैं तो अपने दांतों से एक दूसरे को शरीर के पिछले भाग पर चोट करते रहते हैं। यद्यपि चोट करने से खून बहने लगता है तो भी यह नहीं मानते। इनको इस कार्य्य में बड़ा आनन्द आता है।

देश दर्शन

चिड़ियों का प्रदेश

टुंड्रा के तट बड़े उजाड़ हैं। टुंड्रा प्रदेश में न तो पहाड़ हैं और न जंगल हैं। वहां नाम के लिये भी वृक्ष नहीं दिखाई पड़ते। वहां पर सारी भूमि बर्फ़ीली है और बीच बीच में पचास फुट ऊँचे बरफ़ के टीले हैं। इस उजाड़ बर्फीले प्रदेश में कोई भी वस्तु देखने योग्य नहीं है किन्तु गर्मी की ऋतु में यह प्रदेश चिड़ियों के लिये स्वर्ग बन जाता है। ये चिड़ियां शीतोष्ण कटिबन्ध से गर्मी के दिनों में टुँड्रा चली जाती हैं। ये चिड़ियां अपने घोंसले ज़मीन पर बनाती हैं, इनको पेड़ों की आवश्यकता नहीं पड़ती।

टुंड्रा की चिड़ियां वेडर्स कहलाती हैं। यह टुंड्रा प्रदेश में पानी के किनारे हज़ारों की संख्या में दिखाई पड़ती हैं। बलुहे स्थानों पर जहां पर दलदली भूमि रहती है, वहीं पर ये चिड़ियाँ अपने घोंसले बनाती हैं। ये अपने घोंसले हज़ारों की संख्या में एक स्थान पर बनाती हैं। ये चिड़ियां बड़ी सुन्दर होती हैं।

यदि कोई मनुष्य यहाँ के अबाबीलों के घरों के

पास जाकर खड़ा हो जावे तो ये सभी चिड़ियाँ आकाश की ओर एक साथ उड़ जाती हैं और ऊपर एक बरफ का बादल सा बना लेती हैं। ये ऊपर से अपने बैरी मनुष्य को डराने के लिये रह रह कर भयानक शब्द पैदा करती हैं।

इन से भी अधिक भयानक आवाज़ बगुलों की होती है। बगुले कई प्रकार के होते हैं। किसी का रँग श्वेत, किसी का काला और कुछ दूसरे रंग के होते हैं। यह बगुले पानी के रहने वाले हैं। ।ये हज़ारों के झुण्ड के झुण्ड एक साथ रहते हैं। जब किसी मनुष्य को देखते हैं तो ऊपर जाकर आऊ, आऊ, आऊ शब्द पैदा करते हैं। इनके उड़ने से बरफ का एक बड़ा बादल छा जाता है, इन की भयानक आवाज़ सुन कर बड़ा भय मालूम होता है। वहां का दृश्य देख कर मालूम होता है कि उस प्रदेश के राजा वे ही पक्षी हैं। पक्षियों के सिवा और कोई वस्तु वहां दिखाई ही नहीं पड़ती।

जलाशय के क़रीब और झीलों में चारों ओर भांति भांति की पक्षियां रहती हैं। बगुले अपने ध्यान में मस्त रहते हैं। दरियाई अबाबील (टिटिहरी) टी, टी

शब्द करती हुई मछली पकड़ने में मस्त रहती है। जैसे ही कोई मछली दिखाई पड़ी कि टिटिहरी उस पर टूट पड़ी और जैसे ही वह उसे लेकर उड़ी वैसे ही स्कुवा उसके ऊपर झपटा। अगर अबाबील साहसी रही तो उड़ जाती है नहीं तो स्कुआ शिकार उससे छीन लेता है या वह शिकार पानी में गिरा देता है। इसी प्रकार का तमाशा सारे जलाशय में होता है। इस तमाशे को देखने में भी बड़ा आनन्द आता है।

समुद्री ऊँची तटीय चट्टानों पर गुइल्लेमोर और पेट्रेल चिड़ियां रहती हैं। गुइल्लेमोर चिड़ियों को घोंसले बनाने के लिये अधिक स्थान की आवश्यकता नहीं होती, उन्हें सिर्फ एक अँडा रखने की आवश्यकता होती है। ये बहुत सी एक ही स्थान में इकट्ठी रहती हैं। ज़रा सी आहट होने पर ही यह चिड़ियाँ ज़ोरों से चिल्लाने लगती हैं। रात दिन ये चिड़ियाँ आपस में लड़ती रहती हैं। ये एक अँडे के लिये आपस में लड़ जाती हैं और जब तक अँडा गिर कर फूट नहीं जाता, इनकी लड़ाई समाप्त नहीं होती।

फुल्मार पेट्रेल चिड़ियों के बच्चे बड़े सुन्दर होते

हैं। वे रंगीले, मुलायम और शान्त होते हैं। वे सदैव अपने स्थान पर शान्त चित्त बैठे रहते हैं। उन की माँ उन को बहुत प्यार करती है, शायद वह अपने बच्चों को नियत स्थान से बाहर जाने की आज्ञा नहीं देती, इसी लिये वे बाहर नहीं जाते। बच्चों की माँ स्वयं भी बाहर बहुत कम रहती है। वह घर से दूर नहीं जाती और घूम घूम कर अपने बच्चों को जगाती और देखती रहती है। वह अपने बच्चों को इतना प्यार करती है कि बाप को समीप नहीं आने देती। जब तक ये बच्चे अपनी माताओं के समान बड़े नहीं हो जाते तब तक अपना स्थान छोड़ कर बाहर नहीं जाते। इन बच्चों की ख़ूराक एक प्रकार का तेल होता है, जो उनकी मां की चोंच में पाया जाता है।

ध्रुव प्रदेश की प्रधान चिड़िया गुइल्लेमोर है। कुछ लोग इसको लून भी कहते हैं। यह चिड़िया जल में रहना अधिक पसंद करती है। यह स्कुवा चिड़िया से लड़ा करती है। ये चिड़ियां आपस में भी एक दूसरे से लड़ती रहती हैं। इनकी लड़ाई देखने योग्य होती है। भूमि पर यह लट्टू की भांति एक दूसरे से लड़ते लड़ते

आकाश की ओर जाती हैं और फिर लड़ते लड़ते पानी में उतरती हैं। पानी के ऊपर और भीतर ये लड़ती ही रहती हैं। जब लड़ाई खतम हो जाती है तो फिर एक दूसरे के मित्र की भाँति शान्ति पूर्वक एक साथ उड़ने लगती हैं।

इन के सिवा गौरैया, नीलकण्ठ, कठफोड़वा, लावा, मैना, कबूतर, कांवे, बतख, सारस, खंजन, अबाबील, कोयल, राम चिरैया आदि पक्षियाँ भी गर्मियों के दिनों में टुण्ड्रा प्रदेश में रहा करती हैं।

इस प्रदेश में चिड़ियों का समूह इतना बड़ा दिखाई पड़ता है कि उसे देख कर बड़ा आश्चर्य होता है। इनके रंग-बिरंगे परों तथा कुलेलों को देख कर मनुष्य का जी चहक उठता है।

प्रसिद्ध नगर तथा जनसंख्या

हेल्सिंकी (हेल्सिंगफोर्स) फिनलैंड की राजधानी है। यह यूसीमा (Usimaa) प्रान्त की भी राजधानी है। यहाँ की जनसंख्या लगभग ढाई लाख है। तुर्कू (आबो) यह फिनलैण्ड की प्राचीन राजधानी है। अब यह तुर्को-पोरी प्रान्त की राजधानी है। यहां की जनसंख्या ६१,६६४ है। टैम्पेरे (टैमरफोर्स) प्रधान व्यवसायी नगर है। यहां पर ५२,३६४ व्यक्ति रहते हैं। वीपूरी (विबोर्ग) वीपूरी प्रान्त की राजधानी है, यहां की जनसंख्या ५८,६६० है। वासा नगर की जनसंख्या २४,२१८ है। आउलु (यूलीबोर्ग) नगर की जनसंख्या २३ हज़ार है। कुओपिओ नगर की जनसंख्या २२,७१६ है। पोरी नगर की जनसंख्या लगभग १८ हजार, कोटका की १५ हजार और टावस टेहुस की जनसंख्या ५,५५४ है।

फिनलैंड की जनसंख्या लगभग ४० लाख है कुल आबादी का १७ प्रतिशत भाग नगरों में बसा है और शेष लोग देहात में हैं। भाषा के विचार से ८८ प्रतिशत फिनिश ११ प्रतिशत स्वीडिश, शेष लोग और

दूसरी भाषाओं के बोलने वाले हैं। फिनलैण्ड के ६७ फीसदी लोग प्रोटेस्टेन्ट धर्म वाले, ग्रीक आर्थोडाक्स १७ फीसदी, रोमन कैथलिक्स २ फीसदी, शेष लोग और दूसरे धर्म वाले हैं। व्यवसाय के ध्यान से ६५ फीसदी किसान, १५ फीसदी मज़दूर पेशा, २ फीसदी सरकारी नौकर और शेष लोग दूसरे कामों में लगे हैं।



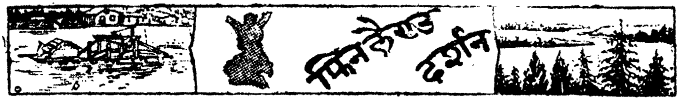
फिनलैंड का व्यवसाय

कड़ी और बिषम जलवायु होने तथा कम खेती के योग्य भूमि होने के कारण फिनलैण्ड में उतनी उपज नहीं होती जितनी कि फिनलैंड को आवश्यकता है। फिनलैंड में घास, आलू, राई, जौ, गेहूँ और जई की उपज होती है।

फिनलैंड में ३,६६,६६८ घोड़े, १८,६०,४७६ पशु, १४,१३,६६७ भेड़ें, ३,६०,५३५ सुअर और ११,०७६ बकरियाँ हैं। वहाँ पर ५६६ दूध के कारखाने हैं जहां पर मक्खन, पनीर आदि तयार किया जाता है। फिनलैंड में ५,६१,८५६ मन मक्खन बनता है।

१६२६ ई० में फिनलैंड में ३५२६ बड़े कारखाने थे, जिनमें १,४६,३६७ मज़दूर काम करते थे। इन कारखानों से १,०६,३५,००० मार्क की आय है। झीलों में भी जहाज़ चलते हैं और वे एक दूसरे से नहरों द्वारा मिली हुई हैं। इन नहरों में सालाना लगभग ६०,००० जहाज चलते हैं। और ५०,००,००० मार्क की आय होती है। फिनलैंड में लगभग १५,७०० मील

पक्की सड़क, १६,००० मील कच्ची सड़क है और २८८६ मील रेलवे लाइन है। इन सड़कों और रेलों से १९२७ ई० में १२,९८,७३,००० मार्क की आय हुई। वहाँ पर २८११ टेलीग्राफ आफिस, १४,१७० मील तार और ५,२६४ टेलीफोन हैं।



फिनलैंड की राजधानी

हेल्सिंगफोर्स फिनलैंड की राजधानी है। पहले यहां की राजधानी ओबो थी। १६१२ ई० के पहले हेल्सिंग फोर्स एक छोटा सा नगर था और वहां पर मछली मारने वाले मल्लाह रहा करते थे। १६१२ ई० में जार और उसके मंत्रियों ने हेल्सिंगफोर्स को फिनलैंड की राजधानी बनाने का इरादा किया। जार ने राजधानी के नगर का खाका तयार करने के लिये जर्मनी से एंगेल को बुलाया। एँगेल ने आकर नगर के खाके को तयार किया। उसने नगर के अन्दर चौड़ी समानान्तर सड़कें एक दूसरे को चौरास्तों पर काटती हुई बनाई। जगह जगह पर चौरास्ते बनाए गये। सब से बड़े चौरास्ते तथा सड़क पर विश्वविद्यालय तथा सरकारी भवन बनाये गये। सेंटनिकोलस का चर्च ऊँचे स्थान पर बनाया गया।

हार्बर पर पहुँचते ही स्वीबर्ग का किला मिलता है। हार्बर के आगे ही रूसी चर्च अपने क्रास चिन्हों के साथ दिखाई पड़ते हैं। बन्दरगाह के घाटों के पास बड़े बड़े स्वेत भवनों की कतारें मिलती हैं, जो सुन्दर खिड़कियों द्वारा सजे हैं। इन महलों की छाया जो समुद्र के

पानी में पड़ती है, उसकी छटा बड़ी ही सुन्दर होती है। कैलियों का चर्च और रेलवे स्टेशन यहां के प्रसिद्ध भवन हैं। कैलियों का चर्च एक पहाड़ी पर स्थित है।

हार्बर के समीप ही हेल्सिंफोर्स का बड़ा बाजार है। इस बाज़ार की दूकानें जब सवेरे सज जाती हैं तो यह बड़ा ही रमणीक हो जाता है। बाज़ार में राई की रोटी की भांति कड़े बिसकुट, ताजी मछलियां (पाइक, पर्च और ब्रीम इत्यादि) और यहां के फल बाजार में अधिक दिखाई पड़ते हैं। बछड़े, गाय और सुअर आदि का मांस यहाँ के बाज़ारों में नहीं दिखाई पड़ता। जाड़े के कारण दूकानों पर बूढ़ी स्त्रियां ठिठुरी हुई शान्त एक कोने में बैठी रहती हैं।

फूल शीशे के बड़े बर्तनों के अन्दर रख कर बेंचे जाते हैं। शीशे के बर्तनों के भीतर लैम्प भी जलती रहती है। क्रिस्मस (बड़ा दिन) के त्योहार के समय लोग हरा वृक्ष और प्रकाश देखना पसंद करते हैं इसलिये सरो (झाऊ) की टहनी प्रत्येक व्यक्ति खरीदता है। मार्च के महीने में भी लोग बर्च की टहनियां खरीदते हैं। जिस प्रकार भारतवर्ष में लोग बसन्त पञ्चमी को

आम की बौर लेना पसंद करते हैं उसी प्रकार फिनलैंड में बर्च की टहनियाँ ग्रीष्मकाल के आरम्भ में पसंद करते हैं।

बाजार के समीप ही नींबू की एक बड़ी वाटिका है। नींबू के वृक्षों के नीचे तरह तरह के फूल लगे हुये हैं। यहाँ पर लोग टहलने तथा गप-शप करने के लिये जाया करते हैं। इस बाग के बीच में रून बर्ग की मूर्ति है। एक कोने पर कापेल्लेर का भवन है। गर्मी के दिनों में यहाँ बैठ कर धूप लेने के लिये सभी लोग आते हैं।

हेल्सिंफोर्स नगर के भीतर बड़ी चहल पहल रहती है। मोटर, लारियों, बसों और ट्रामवेज की आवाजों के सामने बातें सुनना कठिन हो जाता है। यहां जाड़े के दिनों में सड़कों पर स्लीज़ गाड़ियां चला करती हैं।

यहां पर हार्बर के समीप पहाड़ी के ऊपर बॅंस्पार्केन का प्रसिद्ध पार्क है। यहां से सारे नगर का दृश्य दिखाई पड़ता है। पहाड़ी के नीचे सनोवर के जंगल हैं।

यहाँ पर पहले लोग लकड़ी के घरों में रहा करते थे कोई कोई तो सपरिवार एक ही कमरे में रहते थे, किन्तु १६१८ ई० के बाद से यहां बड़े बड़े मकान बनने लगे

हैं और अब सारा नगर बिलकुल आधुनिक ढँग पर बन गया है।

हार्बर के बाहर का समुद्र एक बड़ी झील की भांति है। उसमें ज्वार-भाटा नहीं आता। इस समुद्र के चारों ओर छोटे छोटे द्वीप हैं। इन द्वीपों पर लकड़ी के सुन्दर घर बने हैं। ये घर हेल्सिंगफोर्स के उच्च श्रेणी वालों के गर्मी के मकान हैं। गर्मी के तीन महीने लोग अपना जीवन इन्हीं द्वीपों में बिताते हैं। छोटे छोटे स्टीम बोटों पर बैठ कर इन द्वीपों में लोग आते जाते हैं।

जाड़े के दिनों में इन द्वीपों पर कोई नहीं रहता और उस समय इन द्वीपों में बरफ पर फिसलने वाले जूते पहन कर दौड़ना बड़ा आनन्ददायक होता है। जाड़े के दिनों में नगर में अँधेरा छाया रहता है। कुहरा बहुत पड़ता है, लोग एक दूसरे की सूरत भी नहीं देख सकते। सर्दी के कारण यहां पर अधिक कष्ट नहीं होता वरन् सर्दी की ऋतु अधिक लम्बी होने के कारण लोगों को कष्ट होता है।

यहाँ के हार्बर के एक द्वीप में ज्योलाजिकल गार्डेन है। इस बाटिका में दुनिया के हर प्रकार के पौदे तथा वृक्ष

हैं। यहाँ पर दुनिया के अद्भुत पशु-पक्षी भी रक्खे गये हैं।

हेल्सिंगफोर्स नगर में सर्राफों (सुनारों) की दूकानें बहुत कम हैं क्योंकि फिनलैंड की स्त्रियां गहने बहुत कम पहनती हैं। सरदी की अधिकता के कारण यहाँ पर फैशन की कमी है।

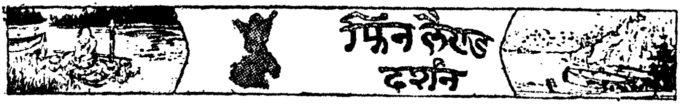
नगर के अन्दर निम्न श्रेणी वाले फिनिश भाषा का प्रयोग अधिक करते हैं। स्वीडिश भाषा भी काफी बोली जाती है।

हेल्सिंगफोर्स या हेलसिन्की फिनलैंड की राजधानी तथा सब से बड़ा नगर है। यहां की जन-संख्या २,३५,००० है। एक तिहाई लोग स्वीडिश भाषा बोलते हैं। फिनलैंड के प्रजातंत्र राज्य के प्रेसीडेन्ट यहीं रहते हैं। इसी नगर में फिनिश डाएट की बैठक होती है। राज्य के प्रधान दफ़्तर यहीं पर हैं।

संक्षिप्त इतिहास

फिनलैंड का इतिहास आठवीं शताब्दी से आरम्भ होता है। उस काल के निवासी बहादुर, परिश्रमी और सहनशील होते थे। वे प्राकृतिक कठिनाइयों का बहादुरी के साथ सामना करते हुये अपनी नई बस्तियां बसाते थे। वे लोग 'योरवे' को वायु देवता, 'टैपिमो' को बन देवता और अहती को जलदेवता मानते थे। दुनिया की और दूसरी जातियों की भांति वे प्रकृति की पूजा करते थे।

जब फिन लोगों ने स्कैन्डीनेविया के तटीय प्रदेश पर लगातार आक्रमण करने लगे तो स्वीडन के बादशाह एरिक नवें ने फिनलैंड को ११५७ ई० में जीत लिया। एरिक ने उप्पासला के बिशप (बड़े पादरी) हेनरी को सैनिकों तथा और दूसरे पादरियों के साथ फिनलैंड में छोड़ दिया कि वे वहाँ के निवासियों को ईसाई बनालें। हेनरी को फिन लोगों ने मार डाला था किन्तु बाद में उसकी स्मृति बनाई गई और वह फिन लोगों का प्रधान सेंट माना जाता है। १२९३ ई० में टोर्केल्स कुनट्सन ने केरलियन्स को जीत कर विबोंग का किला बनवाया इसके बाद १८०९ ई० तक फिनलैंड, रूस और स्वीडन के हाथों का कठपुतली बना रहा।



स्वीडिश काल

स्वीडन ने फिनलैंड में सभ्यता का प्रचार किया और उन्हें अपनी भांति बनाने का भरसक प्रयत्न किया। १५२८ ई० में गस्टवस वासा ने वहाँ पर रिफाम्ड मत का प्रचार किया। जान तृतीय ने फिनलैंड को एक ग्रान्ड डची बनाया। स्वीडन के राजा गस्टवस अडाल्फस ने सत्रहवीं शताब्दी में फिनलैन्ड में डाएट (सभा) की स्थापना की। इस डाएट में उच्च श्रेणी वाले, पादरी, नागरिक और किसान लोग भाग लेते थे। इसके बाद फिनलैंड के सुधार का भरसक प्रयत्न किया गया। किन्तु युद्ध, दुर्भिक्ष और भरी तथा संचारी रोग के कारण देश की दशा बहुत खराब हो गई।

१७१० ई० में रूस के राजा पिटर ग्रेट (बड़े) ने फिनलैंड को स्वीडन से अलग करना चाहा और छः साल के बाद सारे फिनलैंड पर अपना अधिकार जमा लिया। चार्ल्स बारहवें और पिटर के बीच जो युद्ध हुये उसमें हजारों मनुष्य मारे गये किन्तु नीसटाट की संधि के अनुसार विवोर्ग का प्रान्त रूस को मिला।

गस्टवस तृतीय के समय फिनलैंड में लैटिन भाषा का अन्त और स्वीडिश भाषा का प्रचार होने लगा। इसके बाद स्वीडन और रूस में फिर लड़ाई दो साल तक होती रही। १८०८ ई० में गस्टबस चतुर्थ के समय में फिर रूस और स्वीडन से युद्ध छिड़ा। १८०६ ई० में सारा फिनलैंड देश और अलान्ड द्वीप रूस के अधिकार में आ गया।

रूसी काल

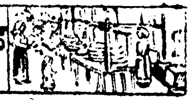
अलिक्ज़न्डर प्रथम के समय में फिनलैंड एक उपनिवेश देश रूस के आधीन बनाया गया। वहाँ पर एक सेनेट स्थापित किया गया और एक गवर्नर जनरल भेजा गया। १८११ ई० में विबोर्ग का प्रान्त फिर से फिनलैंड में मिला दिया गया। सन् १८२१ ई० तक आबो फिनलैण्ड की राजधानी रही, उसके बाद हेल्सिंग फोर्स राजधानी हुई। १८२७ ई० में आबो से यूनिवर्सिटी भी हेल्सिंगफोर्स में हटा कर कर दी गई। अलिक्ज़न्डर तृतीय के समय में 'स्लावोफिल आन्दोलन' ने ज़ोर पकड़ा। स्लाओफिल आन्दोलन का आदर्श वाक्य "वन ला, वन चर्च, वन लेंगवेज" (एक क़ानून, गिरजाघर, और

भाषा) का था। इस समय स्वीडिश पार्टी और फिनिश नैशनलिस्ट पार्टी में काफी तनातनी थी और ये अपना अपना प्रभुत्व फिनलैण्ड पर जमाना चाहती थीं।

निकोलस द्वितीय ने १८९९ से १९०५ तक फिनलैण्ड पर निरंकुश शासन किया। १५ फरवरी सन् १८९९ ई० की घोषणा के अनुसार फिनिश डाएट के कानून बनाने के अधिकार छीन लिये गये। जुलाई सन् १९०१ के कानून के अनुसार फिनिश और रूसी सेनायें मिला दी गईं। रूसी भाषा का प्रचार जहाँ कहीं भी हो सकता था किया गया। रूसी अफसरों की नियुक्तियाँ की गईं। अप्रैल सन् १९०३ ई० में जनरल बाबरिकोव को डिक्टेटोरियल अधिकार दे दिये गये और फिनलैंड पर मनमाने अत्याचार होने लगे। रूसी खुफिया पुलीस ने फिनिश लोगों के विरुद्ध कार्रवाइयां करनी आरम्भ कर दी। गैरक़ानूनीतौर पर गिरफ्तारियाँ सजाएँ और देश निकाले के दण्ड दिये जाने लगे। पत्रों और छापेखानों की स्वतंत्रता छीन ली गई। फिनिश लोगों ने अत्याचारों का विरोध और नवम्बर सन् १९०५ ई० में प्रसिद्ध "नैशनल स्ट्राइक" (राष्ट्रीय हड़ताल)

हुई। इसी समय रूस और मंचूरिया में भी बड़ी गड़बड़ी फैली हुई थी, इसलिये हड़ताल के ६ दिन के बाद अवैधानिक शासन का अन्त हो गया। ७ नवम्बर सन् १६०५ ई० को एक घोषणा की गई जिसके अनुसार फिनलैंड को डाएट बनाने का अधिकार दिया गया। नये डाएट को नया विधान बनाने का भी अधिकार प्रदान किया गया। प्रेस भाषण, मीटिंग और संस्थाओं आदि को स्वतंत्रता मिल गई। १६०५ से १६०७ तक फिनलैण्ड की दशा सुधरी रही और वहाँ पर सभी प्रकार के सुधार होते रहे। ७ अक्टूबर सन् १६०६ के यूके (सरकारी घोषणा) के अनुसार फिनलैंड के ऊपर रूसी सेना का कर लगाया गया। डयूमा ने इसका समर्थन किया, किन्तु डाएट ने विरोध किया। विरोध करते हुये भी डाएट संधि करने के लिये तयार था, किन्तु डाएट को दो बार ज़ार ने भंग किया और दमनचक्र फिर से फिनलैंड पर आरम्भ हुआ। रूसी सेना के लिये कर और रूसी नागरिकों को फिन नागरिकों की भांति सुविधायें देने के लिये दो सरकारी प्रस्ताव डाएट के सामने पेश किये गये। डाएट ने दोनों प्रस्तावों



को ठुकरा दिया। इस पर डाएट भंग कर दिया गया।। डाएट के भंग हो जाने पर जजों ने इस्तीफा दे दिया। बड़े बड़े अफसरों को रूसी दमन ने देश निकाले की सजा दे दी। प्रान्तीय गवर्नरों को भी दमन चक्र में पड़ कर स्तीफा देना पड़ा। ड्यूमा का निरंकुश शासन तथा दमन चक्र ज़ार से किसी प्रकार कम न था। जितना भी अत्याचार रूस को लाभ पहूँचाने के लिये किये जा सकते थे वे किये गये।

१९१४ की बड़ी लड़ाई और रूसो क्रान्ति

जिस समय १९१४ ई० की लड़ाई आरम्भ हुई उस समय लैफ्टिनेन्ट जनरल सीन फिनलैण्ड का गवर्नर जनरल था। फिनलैण्ड के मार्गों पर मोर्चा-बन्दी होने के कारण उस पर आक्रमण तो नहीं हो सका किन्तु तयार माल बाहर नहीं भेजा जा सका। जिसके कारण समुद्री व्यापार में अवनति हुई और खाने की वस्तुओं पर २५ फी सदी व्यय बढ़ गया। सेना विभाग से जिन कारखानों का सम्बन्ध था, उनकी बड़ी उन्नत्ति हुई। रूसी सरकार ने फिनलैण्ड को खुश करने के लिये सैनिक कर

माफ कर दिया और उसके स्थान पर माल अथवा गिरौ आदि पर ५ फी सदी कर लगाया गया। फिनलैण्ड स्वाभाविक रूप से डरता था कि अगर रूस जीतेगा तो उसके ऊपर और अधिक अत्याचार होगा। इसलिये केवल ५००० फिनिश रूस की ओर से लड़ने गये। लगभग इसी संख्या में फिनिश लोग जर्मनी की ओर से भी लड़े थे।

स्नेलमैन स्वीडन का निवासी था। उसने अपना नाम बदल कर इर्जोकोस्किनेन रक्खा। स्नेलमैन ने भाषा की ओर बड़ा ज़ोर दिया। फिनिश किसानों को फिनिश भाषा सिखाने का प्रयत्न किया गया। धीरे-धीरे फिनिश भाषा का प्रचार बढ़ने लगा और स्वीडिश भाषा की अवनति होने लगी। फिनिश लोगों ने माडल स्कूल खोले। यह स्कूल पहले पहल हेल्सिगफोर्स में खोला गया। यूनो जिग नायूस नामक व्यक्ति ने जर्मनी, फ्रांस, इंगलैण्ड आदि देशों का भ्रमण करने के बाद फिनिश प्रायमरी स्कूल खोले। उसने अपने जीवन काल में ७५० स्कूल खोले जिसमें ७२,००० बच्चे शिक्षा पाते थे। ८ साल तक शिक्षा ग्रहण करने के बाद इन स्कूलों के लड़के

विश्वविद्यालय में शिक्षा पाने योग्य हो जाते थे। फिनिश भाषा की उन्नति होने के कारण राष्ट्रीयता का भाव भी फिनिश लोगों में बहुत पैदा हो गया था और वे स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिये तयार हो गये थे।

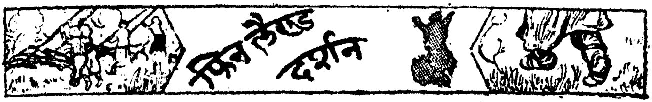
बड़ी लड़ाई के आरम्भ काल में यूनिवर्सिटी के छात्रों ने जर्मनी का समर्थन किया और २०० छात्र जर्मन सेनाध्यक्ष की राय से सैनिक शिक्षा के लिये जर्मनी गये उसके बाद १४०० छात्र और गये। इस प्रकार २००० फिनिश सैनिक जर्मनी में तयार हो गये जो अपने देश पर बलिदान होने पर तत्पर थे। इन सैनिकों का नाम 'पाथ फाइन्डर्स (मार्ग ढूढ़ने वाले) रक्खा गया था।

अप्रैल सन् १९१७ में रूसी क्रान्ति हुई तो फिनलैण्ड में पंचायती सरकार की स्थापना की गई। रूसी डाएक को भंग कर दिया गया। स्टाकोविच गवर्नर जनरल रोडीचेव फिनलैण्ड का मन्त्री और टोकाई फिनिश डाएट का प्रेसीडेन्ट बनाया गया। फिनिश डाएट ने अपने स्वतंत्रता की घोषणा ४ सितम्बर सन् १९१७ को कर दिया और जो कानून रूसी सरकार ने पास होने से रोक दिये थे उन्हें पास किया। ४ जनवरी सन् १९१८

को बोलशेविक सरकार ने फिनलैण्ड की स्वतंत्रता मान ली, इस पर स्वीडन और नार्वे आदि देशों ने भी फिनलैण्ड को स्वतंत्र देश मान लिया। इसके बाद फ्राँस ने भी फिनलैण्ड की स्वतंत्रता स्वीकार कर ली। तीसरी मार्च सन् १६१८ की ब्रेस्ट लिटोव्स्क की संधि के अनुसार फिनलैन्ड एक स्वतंत्र राष्ट्र स्वीकार कर लिया गया, इसके बाद फिनलैण्ड और जर्मनी से संधि हुई जिसके अनुसार दोनों राष्ट्र एक दूसरे के मित्र हो गये।

उसी समय रूसी सेना ने फिनलैंड में उपद्रव आरम्भ किया, फिनलैंड के उच्च श्रेणी वाले भी लाल सेना के सहकारी थे। इस प्रकार फिनलैंड में गृह युद्ध छिड़ गया। फिनलैंड की स्वेत सेना, लाल सेना के उपद्रव को शान्त न कर सकी। इसलिये सहायता के लिये राष्ट्रों से मांग पेश की गई। स्वीडन ने सहायता देने से इन्कार किया किन्तु जर्मनी ने सहायता दी और जनरल कान्ट रेडीगे के सेनापतित्व में १२००० सेना भेजी गई।

जर्मन सेना की सहायता से स्वेत सेना राजधानी पर अपना अधिकार न जमा सकी। इसके पश्चात्



अप्रैल और मई के महीने में श्वेत सेना लाल सेना को परास्त करने में सफल हुई। इसी बीच लाल सेना ने लगभग १५००० हजार श्वेत सेना के लोगों को निर्दयता के साथ कत्ल किया। इस हत्या के पश्चात् जर्मन सेना ने लाल सेना को चारों ओर से घेर कर ९३९१६ लाल सैनिकों के आदमियों को कैद कर लिया।

जून १९१८ में फिनिश डायट की बैठक हुई। साम्यवादी लोगों को इसमें अधिकार नहीं दिया गया और पेह एविन्ड स्विनहूफड नामक जर्मन व्यक्ति को डायट का प्रधान बनाया गया। जर्मन एम्परर के बहनोई हेस्से के प्रिन्स फ्रेडिक चार्ल्स को राजगद्दी दी गई। चार्ल्स ने ताज को स्वीकार तो कर लिया, किन्तु फिनलैंड नहीं गया। ११ नवम्बर सन् १९१८ को शान्ति दिवस मनाया गया और फिनलैंड, अमरीका तथा इंगलैंड की भांति एक प्रजातंत्र राज्य बना। १२ दिसम्बर को मैनरहीम के हाथ फिनलैंड की बागडोर आई। उसने अपनी सरकार बनाई। जिसमें ६ प्रजातंत्रवादी और ६ साम्राज्यवादी लोग रक्खे गये। इसके पश्चात् फिनलैंड की सेना को मज़बूत तथा ठोस बनाया गया।

प्रजातन्त्र राज्य की स्थापना

१७ जून सन् १६१६ में फिनिश डायट ने अपने प्रजातंत्र राज्य की स्थापना की। फिनलैंड का नया विधान १७ जुलाई को लागू किया गया। जिसके अनुसार डायट को अधिपति माना गया है। राज्य प्रबन्ध की बागडोर प्रेसीडेन्ट के हाथ में है। प्रेसीडेन्ट का चुनाव ३०० एलेक्टरों द्वारा होता है। इन एलेक्टरों को फिनलैंड के नागरिक कहते हैं। प्रेसीडेन्ट को नये कानून को प्रचलित करने, रोकने और भंग करने का अधिकार है। प्रेसीडेन्ट डायट को भी भंग कर सकता है। चुनाव सम्बन्धी सभी अधिकार उसे प्राप्त हैं। वह वैदेशिक नीति का भी प्रधान है। प्रेसीडेन्ट की सहायता के लिये राज्य के मंत्रियों की एक सभा है जिसमें १० मंत्री हैं। ये मंत्री प्रेसीडेन्ट के कथनानुसार सारे कार्य करते हैं।

२५ जूलाई सन् १६१६ को प्रोफेसर कारलो जहो प्रथम प्रेसीडेन्ट बनाया गया। उसके बाद एरिच और फिर विल्लोला सरकार स्थापित की गई।

१४ अक्टूबर सन् १६२० को डोरपट की संधि रूस के साथ हुई। जिसके अनुसार पेचेन्गा फिनलैंड को

वापस कर दिया गया। इस स्थान के कारण फिनलैंड को आर्कटिक सागर में जाने का मार्ग मिल गया। ६ दिसम्बर सन् १६२० ई० को फिनलैंड लीग आफ़ नेशन्स का मेम्बर हो गया। आलंद द्वीप समूहों का जो झगड़ा फिनलैंड और स्वीडन के बीच चल रहा था, उसे लीग आफ़ नेशन ने फिनलैंड को दिलवा दिया।

संधि होते हुये भी रूस और फिनलैण्ड के भाव स्वच्छ नहीं हुये। सदैव फिनलैण्ड को रूस की ओर से शक बना रहा। उनका शक ठीक निकला और आखिर रूस ने फिनलैण्ड पर आक्रमण कर ही दिया।

१६२६ के चुनाव के अनुसार फिनलैण्ड के डायट में पार्टियों की शक्ति दी जा रही है।

पार्टी	सदस्य
स्वीडिश पार्टी	२३
कोअलीशन पार्टी	२८
प्रोग्रेसिव पार्टी	७
अग्रेरियन संस्था	६०
सोशलिस्ट समाजवादी संस्था	५६
कम्युनिस्ट (साम्यवादी) संस्था	२३

सभी संस्थाओं के सदस्य फिनिश भाषा बोलते हैं।

फिनलैंड की सेना

फिनलैंड का प्रेसीडेन्ट फिनलैंड की सेना का प्रधान सेनापति होता है। प्रेसीडेन्ट अपने अधिकार किसी जनरल को भी प्रदान कर सकता है। प्रेसीडेन्ट की सहायता के लिये सैनिक विभाग होता है जिसका प्रधान सेना मंत्री होता है। १७ साल की अवस्था होने पर फिनिश लोग सेना में भरती हो सकते हैं। ५२ साल की अवस्था तक वे सेना में रह सकते हैं।

फिनलैंड की सेना रिजर्व को छोड़कर २८००० है। फिनलैंड के पास ५ स्क्वैड्रन की हवाई शक्ति है। फिनलैण्ड के टैङ्क और एन्ट क्राफ्टगन भी है जिनसे वे बैरी के वायुयानों को मार कर गिरा सकते हैं।

समुद्री शक्ति फिनलैंड की बहुत क्षीण है। केवल चार पिट्राल से चलने वाले बोट हैं। इसके सिवा दो टारपीडो (जहाज तोड़ने वाले) बोट, ४ माइनलेअर (सुरंग लगाने वाले बोट) और चार माइन स्वीपर बोट हैं।

✳✳✳



फिनलैंड में जून मास का त्योहार । इस दिन सब लोग आग जला कर आग के चारों ओर नाचते हैं । इससे यहाँ की ठंड का पता लग सकता है ।



शीतकाल में बरफ़ से घिरे हुए फिनलैंड के ठंडे बन का एक दृश्य



फिनलैंड के वीर मैनरहीम

वर्तमान समय में फिल्ड मार्शल मैनरहीम का नाम प्रत्येक फिनलैण्ड निवासी की ज़बान पर है। वह फिनिश सेना का प्रधान सेनापति है। मैनरहीम ने जिस चतुरता और वीरता के साथ अपने देश की रक्षा सोवियट आक्रमण के विरुद्ध कर रहा है उसके कारण सकल सभ्य संसार में उसका नाम प्रसिद्ध है किन्तु जिन अनुभवों तथा कार्यों के कारण उसकी उन्नति हुई है कदाचित उसे सब लोग नहीं जानते हैं।

फील्ड मार्शल बैरन गस्टाफ मैनरहीम का जन्म १८६७ ई० में हुआ था। मैनरहीम का जन्म जिस कुल में हुआ है। वह उस समय से फिनलैण्ड में प्रसिद्ध है और आदर तथा सत्कार की दृष्टि से देखा जाता है।

मैनरहीम का परपाजा (दादा का बाप) एक बड़ा राजनीतिज्ञ था और उसने रूस तथा फिनलैंड के १८०८–९ के समझौते में एक प्रधान भाग लिया था, जिसके फल स्वरूप फिनलैन्ड रूसी साम्राज्य के अन्दर एक ग्रेंड डची बनाया गया था। ग्रैंडडची की स्थापना के

पश्चात् वह फिनलैंड का प्रधान मंत्री बनाया गया था, मैनरहीम का पिता अपनी समाज सुधार सम्बन्धी विशेषताओं के लिये प्रसिद्ध है। मैनरहीम की माँ उसके बाल्य काल में बहुधा कहा करती थी कि "मुझे किसी भी बच्चे की परवाह नहीं है, किन्तु मुझे केवल उस बालक की परवाह है जो एक दिन संसार में गस्टाफ के नाम से प्रसिद्ध होगा"।

गस्टाफ की एशिया की यात्रा

गस्टाफ ने अपनी मां के कथन को पूरा कर दिखाया उसने अपना एक सैनिक जीवन बनाया और रूसी साम्राज्य की सेना में भर्ती हो गया।

जब रूस तथा जापान के बीच युद्ध हुआ तो मैनरहीम ने उस युद्ध में बड़ा नाम पैदा किया। उसके पश्चात् रूसी सैनिक अफसरों के कहने पर वह एशिया की यात्रा करने पर राज़ी हुआ। एशिया की ६००० मील की यात्रा उसने घोड़े पर की। जिसके फलस्वरूप उसने बहुत सी नई नई बातों का पता लगाया। उसने अपने यात्रा में जो सामग्री एकत्रित की है वह फिनलैंड के



पब्लिक म्यूज़ियम में है। उसने बहुत से बहुमूल्य चीनी हस्त लिखित चीन लेखों का पता लगाया। नये नये देशों की खोज की और एशिया के रहने वालों के जीवन के बारे में काफी ज्ञान प्राप्त किया। मैनरहीम ने उस समय के दलाई लामा से भी भेंट की जिससे मिलना बड़ा कठिन होता है और उसे एक रिवाल्वर पिस्तौल भेंट रूप प्रदान किया।

जब १६१४ के महायुद्ध का आरम्भ हुआ तो मैनरहीम रूसी घुड़ .वार सेना का सेनापति बनाया गया और और वारसा में उसे भेजा गया। जब तक वह वार्सा में रहा उसने युद्ध बड़ी कला-कौशल के साथ किया वह दुश्मन सेना पर आक्रमण और अपनी रक्षा दोनों साथ साथ करता था। यह उसी की युद्ध कला का फल है। जो आज फिनिश सेना रूसी सेना के आक्रम्रण से अपनी रक्षा का प्रयत्न भी करती रही है।

१६१६ ई० में उसने कार्पेथियन प्रदेश (ट्रान्सिल्वानिया) में जो युद्ध किये हैं वे बड़े प्रशंसनीय हैं। एक बार की घटना है कि जब वह जर्मन कैदी सेना का निरीक्षण कर रहा था तो उसने एक सैनिक की ओर

संकेत करके पूछा कि "जर्मनी कब तक लड़ाई जारी रख सकता है"। जर्मन सैनिक ने बहादुरी से उत्तर दिया, "हुज़ूर जब तक हमारी जीत नहीं होती है"। मैनरहीम ने जर्मन सैनिक के निर्भय उत्तर का समर्थन हर्षता के साथ किया। जिसकी जर्मन सैनिक को कभी भी आशा न थी, क्यों कि रुसी जनरल मामूली तौर पर ऐसे उत्तर पर समर्थन करने के सिवा कड़ा दण्ड प्रदान करते थे। इस घटना से हम अनुमान कर सकते हैं कि मैनरहीम बीरता का कितना आदर करता है।

जब १९१७ ई० में रूसी साम्राज्य का अन्त हुआ तो मैनरहीम अपने देश को वापस आया। उस समय रूस की ऐसी स्थिति थी कि सभ्यता का सर्वनाश हो गया था और रूसी सैनिक अपने अफसरों की हत्या खुले आम करती थी। ऐसी ही परिस्थिति में मैनरहीम अपने देश को अपने फौजी वस्त्र धारण किये हुये वापस होते समय उसे तनिक भी भय न प्रतीत हुआ कि रुसी सैनिक अफ़सर होने के कारण उस पर आक्रमण भी हो सकता है। जिस ट्रेन से वह यात्रा कर रहा था, उसी में कुछ अँग्रेज़

रेड क्रास सोसाइटी के भी यात्रा कर रहे थे, उनकी रक्षा का भार भी मैनरहीम पर ही था।

जब रूस में बोल्शेविक विद्रोह आरम्भ हुआ तब फिनलैण्ड में कुछ बोल्शेविक केन्द्र बन गये। लेकिन फिनलैंड के पूँजीपति और जागीरदार इस आन्दोलन के विरुद्ध थे। इसी समय मैनरहीम कुली के भेष में यहाँ आ पहुँचा।

१६१८ के आरम्भकाल में मैनरहीम फिनिश सेना का प्रधान सेनापति बनाया गया। उस समय बोल्शेविक सेना ने दक्षिणी फिनलैण्ड पर आक्रमण किया था और वहां के निवासियों को बहुत पूरी तरह तबाह कर रही थी। फिनिश सरकार शीघ्रता में उत्तर की ओर हटा दी गई थी और मैनरहीम को शांति स्थापित करने के लिये सेना बनानी पड़ी थी। बोल्शेविक सेना का सामना करने के लिये मैनरहीम कुछ सौ फिनिश सेना को लेकर उसके सामने जा डटा। उस समय उसके पास बहुत खराब हथियार तथा सैनिक थे। लेकिन उसके सीसी सैनिक पक्के निशानेबाज थे। धीरे धीरे उसकी सेना बढ़ने लगी। युद्ध सामग्री भी एकत्रित होने लगी और

थोड़े ही समय में सामना करने के लिये भली भांति तयार हो गया। वह अपनी सेना को तीन भागों में बांट देता था। एक बड़ा भाग रूसियों से सामने लड़ता। शेष दो भाग दायें बायें और पीछे रूसी सेना पर आक्रमण करते। सामने रूसी सेना आगे बढ़ती। लेकिन शेष तीन ओर से अचानक और एक साथ आक्रमण होने पर वह घबरा जाती। उसने युद्ध में विजय प्राप्त की और मई सन् १९१८ को वह विजयी हेल्सिंगफोर्स को वापस हुआ। हेल्सिंग-फोर्स स्वतंत्र फिनलैण्ड की राजधानी हो गया।

थोड़े ही समय में मैनरहीम के सामने यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि वह फिनलैंड की स्वतंत्रता की स्वीकृति मित्र राष्ट्रों से करावे और बाहर से काफी मात्रा में भोजन सामग्री का यत्न करके अपने देश को भूखों मरने से बचावे। १९१८ के अन्त में वह फिनलैंड का रीजेन्ट (राज्याधिकारी) चुना गया। उसी के समय में फिनलैंड के स्वतंत्र विधान की रचना की गई। आजकल फिनलैण्ड एक प्रजातंत्र राज्य है और उसकी बागडोर प्रेसीडेन्ट के हाथ में रहती है जो पांच साल के लिये चुना जाता है।

मैनरहीम ने निजी तौर पर कई बार इंगलैंड का भ्रमण किया है और वहाँ उसके बहुत से मित्र हैं। १९३६ ई० में वह अपने देश की ओर से महाराज जार्ज पंचम के मृतक संस्कार में भाग लिया था।

कुछ समय पश्चात् वह अपने पद से अलग हो गया किन्तु फिनलैंड की रक्षा का प्रश्न सदैव उसके हृदय में बना रहा। उसने बहुत से सामाजिक सुधार भी किये। उसने अपने नाम पर युवकों के एक दल की स्थापना की है जो बच्चों की देख भाल करता है।

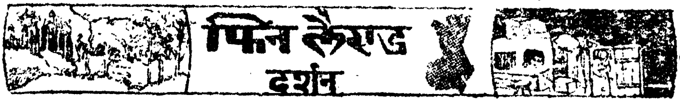
वर्तमान समय में फील्ड मैनरहीम की अवस्था ७३ साल की है तो भी वह एक नव-युवक की भांति बहादुर, फुर्तीला और प्रभावित प्रतीत होता है। वह एक बड़ा बातूनी (बात चीत करने वाला) है और बात चीत करते समय सुनने वालों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। वह बात चीत करते समय समयानुकूल उत्तर तथा अपनी अनुमति प्रकट करता है। उसका निर्णय बड़ा तीक्ष्ण तथा कठोर होता है।

वह एक बड़ा उत्साही खिलाड़ी तथा शिकारी है। और उसने बहुत से देशों में खेल-कूद और शिकार कर

के अनुभव किये हैं। उसने आल्प्स के ऊपर सांभर के शिकार का, पोलैण्ड में जंगली भैंसों के शिकार का और भारतवर्ष में शेर, चीता आदि जंगली पशुओं के शिकार का अभ्यास किया है। वह प्रथम श्रेणी के घुड़सवार की हैसियत से अपने अंग्रेज मित्रों के साथ ग्रैन्ड नेशनल खेल के लिये ऐन्ट्री में जमा करता है।

वर्तमान समय में जब सोवियट रूस ने फिनलैंड पर आक्रमण किया तो मैनरहीम फिर फिनिश सेना का प्रधान सेनापति बनाया गया है। सारी फिनिश जाति उसकी सहायता के लिये हर समय तयार रहती। है। फिनलैंड को उसके ऊपर पूरा भरोसा है। वह फिनलैण्ड की मान रक्षा अस्तित्व तथा स्वतंत्रता और अधिकार के लिये युद्ध कर रहा है। चाहे उसे इस काय में जो कष्ट उठाना पड़े। वह सहर्ष उसे सहन करने को तयार है। वास्तव में राष्ट्र निर्माण जो काम पिल्सुडस्की ने, पोलैंड के लिये और मसारिक ने चेकोस्लोवेकिया के लिये किया वही काम मैनरहीम ने फिनलैंड के लिये किया।

—:०❀०:—



फिनलैण्ड और शरद ऋतु का हिमांक

शरद ऋतु के हिमांक का प्रभाव भिन्न भिन्न देशों पर भिन्न-भिन्न प्रकार का पड़ता है। कनाडा तथा रूस पर उनके बड़े होने तथा अच्छे आर्थिक आय के कारण इसका प्रभाव कम हो जाता है। फिनलैंड न तो रूस की भांति स्वयं अपनी आवश्कताओं की पूर्ति कर सकता है। और न उसे बर्फीले समुद्र की ओर मार्ग ही है। वह कनाडा की भांति विविध प्रकार से दूसरे देशों से मिला भी नहीं है। आर्कटिक सागर का पेटसामो मार्ग बहुत छोटा है। किन्तु इस मार्ग में भी भौगोलिक कठिनाइयों के कारण उन्नति नहीं हो सकी है और कभी व्यापार के लिये उपयोगी नहीं है। पूर्वी योरुप के देशों तथा बर्फीले प्रदेशों के कारण फिनलैंड एक द्वीप राष्ट्रीय की तरह है और उसे आर्थिक, शारीरिक मानसिक सुधार के लिये बाल्टिक सागर की ओर ही देखना पड़ता है। फिनलैण्ड का सारा व्यापार समुद्र द्वारा होता है। बाल्टिक सागर के बन्द हो जाने से फिनलैण्ड की दशा बड़ी शोचनीय हो जाती है।

फिनलैण्ड के उत्तरी-पूर्वी बाल्टिक तट की लम्बाई ९५० मील है, इसमें बोथनिया तथा फिनलैण्ड के खाड़ियों के तट शामिल हैं। बोथनिया की खाड़ी पूर्व की ओर आर्कटिक सीमा तक और फिनलैण्ड की खाड़ी पूर्व की ओर योरुप महाद्वीप के भीतर तक घुसी है। लाडोगा की झील फिनलैण्ड की खाड़ी से नेवा नहर द्वारा मिली हुई है।

फिनलैण्ड बाल्टिक प्रदेश का एक भाग है। यहां की भूमि

ककरीला पथरीली है। इस देश की कड़ी चट्टानें बहुधा बरफ से ढकी रहती हैं। इन चट्टानों के कारण पानी नहीं बह सकता और अगणित संख्या में झीलें बन गई हैं। मध्यवर्ती भाग में एक निचला पठार है और दलदल सारे देश में फैले हुये हैं। देश के भीतर आने जाने के लिये नाव सबसे अधिक उपयोगी है। नदियों में बहुत से प्रपात पाये जाते हैं तो भी लोग नदियों के किनारे अधिक दूर तक जा बसे हैं।

६० उत्तरी अक्षांस के ऊपरी प्रदेश में शीत काल की प्रधान ऋतु होती है। फर्वरी के महीने में कड़ी सरदी पड़ती है। इस ऋतु में उत्तरी फिनलैण्ड में विकराल जाड़ा पड़ता है और भूमि तथा समुद्र के सभी स्थान बरफ से जम जाते हैं।

बाल्टिक तथा अटलांटिक सागर के बीच का समुद्री भाग बहुत उथला है। जिसके कारण अटलांटिक सागर की लहरें नहीं आने पातीं। उत्तरी सागर के मुहाने से भीतर की ओर पानी का खारापन कम होता जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि बाल्टिक सागर में मीठे पानी की बहुत सी धाराएँ आकर गिरती हैं। कुछ लोग बाल्टिक सागर को एक नदी कहते हैं और कुछ इसे एस्चुअरी बताते हैं। इस सागर में ज्वार-भाटा बहुत कम आता है। यहाँ पर २४ घन्टे में केवल एक बार ज्वार चढ़ता है जो बीस सेन्टीमीटर होता है। पानी स्थिर तथा शान्त होने के कारण शीत काल का हिमांक बढ़ जाता है।

शीत काल में फिनलैण्ड बरफ से ढक जाता है। चारों ओर बरफ ही दिखाई पड़ता है। उत्तरी क्वारकेन के समीप बोथनिया की खाड़ी में बरफ का पुल बन जाता है आलैण्ड तथा स्वीडन

के बीच इसी तरह का पुल बन जाता है जो बोथनिया के बेसिन को बाल्टिक सागर से अलग कर देता है। मामूली तौर पर होख-लैण्ड तक बरफ की चट्टानें हर साल बन जाती हैं किन्तु अगर सरदी अधिक पड़ी तो बाल्तीन हेल्सिन्की तक बरफ की चट्टानें जम जाती हैं। बर्फीली चट्टानों के होने के कारण जहाजों का चलना कठिन हो जाता है। बरफ तोड़ने वाले जहाज इन चट्टान को समुद्री मार्ग पर इकट्ठा नहीं होने देते। बोथनिया की खाड़ी से फिनलैण्ड की खाड़ी तक दिसम्बर के अन्त तक बरफ ही बरफ हो जाती है। जनवरी के मध्य तक आलैण्ड द्वीप समूह तुर्की द्वीप से बरफ के कारण मिल जाता है। मार्च के महीने तक बरफ अपने उच्च शिखर तक पहुँच जाती है। बरफ का पिघलना अप्रैल के महीने से आरम्भ होता है।

फिनलैण्ड के भीतरी भाग में उत्तर की ओर से बरफ जमने लगती है और दक्षिण पश्चिम में समुद्री मैदानों तक जम जाती है। टुण्ड्रा प्रदेश में अक्टूबर के मास से ही बरफ जमने लग जाती है और भीतरी पानी की धाराएँ दिसम्बर के महीने तक बरफ से जम जाती हैं। उत्तरी फिनलैण्ड की भूमि ७ महीने तक और दक्षिण की ५ महीने तक बरफ से जमी रहती है।

बसंत ऋतु के आने पर धीरे-धीरे शीतकाल के अंधेरे (धुंधले) दिनों का अन्त हो जाता है। सूर्य के प्रकाश से बरफ पिघलने लगती है और नदी नाले बहने लगते हैं। मई की कड़ी धूप में फिनलैंड के भीतरी भाग की बरफ पिघल जाती है और नदियाँ बहने लगती हैं। लैपलैंड और इनारी की झील की बरफ

आधी रात के सर्य प्रकाश में विघलती है। कोलहकोस नदी द्वारा इनका पानी आर्कटिक सागर में जाता है।

जैसे जैसे फिनलैंड के निवासियों को वहाँ की शरद ऋतु सहने का अभ्यास हो गया है वैसे वैसे उन पर इसका अधिक प्रभाव पड़ा है। मनुष्य जाति ऋतुओं को बदल तो नहीं सकती किन्तु वह अपने जीवन को ऐसा बना लेती है जिससे वह कठिनाइयों का सामना कर सके। इसी प्रकार फिनलैंड के निवासियों ने अपने जीवन को ऐसा बना लिया है जिससे उन्हें शीतकाल से अधिक कठिनाई नहीं पड़ती।

शीतकाल के हिमांक का प्रभाव फिनलैंड पर जो पड़ता है वह दो भागों में विभाजित किया जा सकता है (१) भीतरी प्रभाव (२) बाहरी प्रभाव।

१—भीतरी प्रभाव

हिमांक के कारण कृषी सीमित हो जाती है उपज में कमी हो जाती है और वहां की लकड़ी बाहर नहीं भेजी जा सकती। लकड़ी जाड़े के दिनों में इकट्ठा कर दी जाती है और गरमी में फिर धार के साथ लट्ठों के बड़े बेड़े बहाये जाते हैं। एक एक बेड़ों में लगभग १२,००० लट्ठों के होते हैं।

हिमांक के कारण स्थल मार्ग जलमार्गों का स्थान ले लेते हैं। लकड़ी के जूतों पर लोग बरफ में फिसलते हैं। रेलों के बन जाने से जाड़े तथा गर्मी दोनों ऋतु में यात्रा करने में आसानी होती है। बरफ के कारण और दूसरी सरकार द्वारा लम्बी यात्रा नहीं की जा सकती।

बरफ पड़ने के कारण रेलों द्वारा वे काम भी किये जाते हैं जो ग्रीष्म काल में आस्ट्रोबोथनिया उत्तर-दक्षिण के व्यापार का एक केन्द्र बन जाता है। यह स्थान ग्रीष्मकाल के पूर्व-पश्चिम के व्यापार का केन्द्र नदी द्वारा रहा करता है। पोरी और तुर्कू पूर्वी बन्दरगाह हैं।

फिनलैंड में लगभग १,००,००० अश्वशक्ति की बिजली तयार की जाती है, इसका अधिकांश भाग हाइड्रो इलैक्ट्रिक द्वारा तयार होता है। यद्यपि फिनलैंड की नदियों में बहुत से प्रपात पाये जाते हैं तो भी बरफ के कारण ये नदियाँ जम जाती हैं और इनसे बिजली नहीं तयार की जा सकती। इमात्रा प्रपात से बिजली तयार होती है। यह उवाक्सी नदी पर स्थित है। इस प्रपात का पानी ६० फुट की ऊँचाई से गिरता है और लगभग आध मील में फैल जाता है। पानी की तीव्र धार वाले प्रपात जम जाते हैं। केर्माजोकी, आउलोजोकी और पादूसजोकी के प्रपातों में काफ़ी बिजली तयार हो सकती है किन्तु जम जाने के कारण सारी बिजली बेकार हो जाती है।

सारे देश की बिजली एक साथ मिली हुई है। जगह जगह पर बिजली तयार करने के लिये स्टेशन बने हैं, इन स्टेशनों में जो बिजली तयार होती है वह बड़े समय पर काम देने के लिये सुरक्षित रखी जाती है। अभी हाल ही में बानाजो में एक बड़ा बिजली घर बनाया गया है जिससे बिजली तयार की जाती है।

फिनलैंड के कई हजार व्यक्ति अपना जीवन मछली मार कर व्यतीत करते हैं। शीतकाल में पानी जमजाने के कारण मछली का शिकार बन्द हो जाता है। पहले लोग लड़ाई में सील मछली

का शिकार किया करते थे, यह लोग बरफ के अन्दर छेद बना कर रहा करते थे। अब यह कार्य खतरनाक तथा कम लाभदायक होने के कारण बन्द कर दिया गया है।

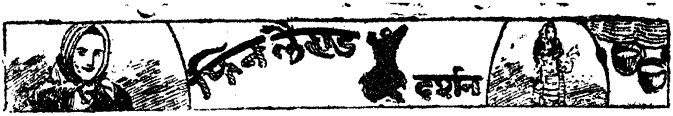
(२) बाहरी प्रभाव

फिनलैंड ने १८७५ ई० में अपना शीतकाल का समुद्री व्यापार योरुप के साथ आरम्भ किया था, किन्तु १८९० ई० में बराबर आने वाली सर्विस जारी हुई है। १८७० ई० के बाद लकड़ी के स्थान पर कागज़ तथा गूदा भेजा जाने लगा है।

१८५९ ई० के बाद बिजली द्वारा कारखानों का काम होने लगा और रेलवे लाइन जल मार्गों से मिला दी गई। भाप वाले जहाज़ों के चलने के कारण फिनलैंड पश्चिमी देशों से मिल गया और वहाँ शीतकाल में भी जहाज़ चलने लगे। जब लोहे के जहाज़ों का बनना आरम्भ हुआ तो फिनलैंड में भी जहाज़ बनने लगे।

शीतकाल के हिमांक का सब से कम प्रभाव हाँको प्रायद्वीप में पड़ता है इसलिये फिनलैण्ड सरकार की ओर से हांको में एक बन्दरगाह स्थापित किया गया। हाँको योरुप के प्राचीन काल का शीतकाल के व्यापार का केन्द्र था तो भी बर्फीले समुद्र होकर जहाज़ों का चलना १८८८ ई० में एक अद्भुत् चमत्कार माना गया धीरे धीरे जहाज़ों के चलने में उन्नति की गई और १८९० ई० तक हाँको का व्यापारिक केन्द्रत्व जाता रहा और दूसरे फिनिश बन्दरगाह उन्नति कर गये।

बरफ़ तोड़ने वाले इंजनों के बन जाने से शीतकाल में दक्षिणी-



पश्चिमी बन्दरगाह भी खुल गये। पहले बरफ तोड़ने वाले जहाजों को अधिक बर्फीले स्थानों पर बड़ी कठिनाई उठानी पड़ी किन्तु १८९५ई० में कनैडा की बड़ी झीलों के नमूने के जहाज तयार किये गये। अब सभी फिनिश बन्दरगाहों पर बरफ तोड़ने वाले जहाज रहते हैं। यह जहाज अब फिनलैंड के डाकों पर फिनलैण्ड के इञ्जीनियरों द्वारा बनाए जाते हैं। बरफ तोड़ने वाले जहाजों के कारण कोटका आदि बन्दरगाह अधिक समय तक खुले रहते हैं। कोटका का बन्दरगाह किसी समय में पाँच महीने के लिये बन्द रहता था किन्तु अब बरफ तोड़ने वाले जहाजों के हो जाने से वह मुश्किल से २ महीने बन्द रहता है। जिस प्रकार योरुप के बड़े राष्ट्रों के समुद्री जहाजी बेड़े उनके व्यापार के रक्षक हैं उसी प्रकार फिनलैंड के व्यापार का रक्षक यहां का बरफ तोड़ने वाला जहाजी बेड़ा है।

बरफ तोड़ने वाले जहाजों के बन जाने से शीतकाल के व्यापार में बहुत कुछ सुभीता हो गया है और व्यापार उन्नति कर गया है, किन्तु फिर भी शीतकाल में जहाज चलाने के लिये बहुत बड़े परिश्रम की आवश्यकता है। बरफ के कारण लोगों पर कर का बोझ अधिक हो जाता है।

फिनलैण्ड का अधिकांश व्यापार ग्रीष्म काल में होता है। शीतकाल में ग्रीष्मकाल का केवल आधा व्यापार होता है। गर्मी में निर्यात अधिक तथा सर्दी में आयात अधिक होता है। हेल्सिन्की और तुर्कों ऐसे स्थानों पर स्थित हैं जहां से फिनलैंड का अधिकांश सामान बाहर भेजा जा सकता है। तुर्कों बन्दरगाह से फिनलैंड के दूध का सामान प्रतिदिन बाहर भेजा जाता है। शीतकाल

में फिनलैंड की लकड़ी बिल्कुल बाहर नहीं भेजी जा सकती। इसलिये भविष्य में या तो बन्दरगाहों की संख्या अधिक बढ़ाई जावेगी या भीतरी आवागमन के मार्गों का सुधार किया जावेगा।

हेलिंसकी तथा तुर्को के नगर बड़े बन्दरगाह और कारखानों के प्रधान केन्द्र हैं। यहाँ के कारखानों में फिनलैंड के भीतरी प्रयोग के लिये सामान तयार किये जाते हैं। इन दोनों बन्दरगाहों से रेल द्वारा सामान फिमलैण्ड के सभी प्रान्तों में पहुँचाया जाता है। शीतकाल में इन बन्दरगाहों का तटीय व्यापार बन्द होजाता है।

सचमुच शीतकाल में फिनलैंड की दशा बिलकुल ही बदल जाती है। इस देश की स्थिति ऐसी है जहां ग्रीष्मकाल शीतकाल से अधिक अच्छा माना जाता है। गरमी की ऋतु में फिनलैंड का व्यापार अधिक बढ़ जाता है किन्तु जाड़े में यह बहुत कम हो जाता है।

यद्यपि भिन्न प्रकार के सामानों की मांग होने के कारण फिनलैण्ड के कारखाने उन्नति कर रहे हैं तो भी बहुत से काम ऐसे हैं जो जाड़े के दिनों में बिलकुल बन्द हो जाते हैं। मकान बनाने तथा जहाज़ बनाने आदि का काम शीतकाल में बन्द रहता है इसलिये बेकारी बहुत बढ़ जाती है। जनवरी से मार्च तक सभी सामानों की और खासकर लकड़ी की बहुत माँग रहती है। बसंत ऋतु के आने पर कारोबार का आरम्भ होने लगता है और देश की आर्थिक स्थिति भी सुधरने लगती है।

शीतकाल के हिमांक के कारण ही फिनलैंड योरुप से शीत काल में अलग हो जाता है। फिनलैण्ड उन्हीं अक्षांशों में स्थित

है जिनमें ग्रीनलैंड है। सेन्टलारेन्स की स्चुअरी लगभग १००० मील दक्षिण की ओर स्थित है। किन्तु इन स्थानों में उतने ही समय तक बरफ जमी रहती है जितने समय तक फिनलैण्ड की खाड़ी में बरफ जमी रहती है। फिनलैंड ने पश्चिमी लोगों से जितने सामाजिक रीत-रिवाज सीखे हैं, उन्होंने समझ लिया है कि मनुष्य को अपनी परिस्थिति (Environment) का गुलाम न होना चाहिये। बल्कि मनुष्य को उससे अधिक से अधिक लाभ उठाने का प्रयत्न करना चाहिये।

फिनलैण्ड का जीवन सचमुच ही एक युद्ध-क्षेत्र है वहां के निवासियों को अपनी जीवनरक्षा के लिये साल भर बराबर प्रयत्न करना पड़ता है। वहां के लोग अपने प्राकृतिक जीवन को उन्नति देना चाहते हैं, वे लोग पश्चिमी सभ्यता का भी तोड़ मरोड़ अपनी आवश्यकतानुसार करते हैं। उत्तरी प्रदेशों का जीवन देखने से पता चलता है कि प्रकृति का प्रभाव मनुष्य की सभ्यता पर बहुत अधिक पड़ता है। वहां के निवासियों की प्रतिदिन की कहानी संसार के और दूसरे भागों से अलग है।

देश दर्शन

वीपुरी नगर का पतन

कोईविस्टो का द्वीपीय किला फिनलैंड के निवासियों ने खाली कर दिया। तीन महीने तक लगातार इस दुर्ग का घेरा रूसी सेना डाले रही और बम तथा तोपों द्वारा गोलों की वर्षा करती रही। आखिरकार वीपुरी नगर का पतन होगया और वह रूसियों के अधिकार में आगया। वीपुरी फिनलैंड का दूसरा बड़ा नगर है। रूसियों को इस नगर के जीतने से कोई बड़ा लाभ नहीं हुआ है क्योंकि नगर में कोई वस्तु बाकी नहीं रह गई। फिनिश लोगों ने उसे बिलकुल खाली कर दिया है।

युद्ध के पहिले वीपुरी नगर फिनलैंड का सब से अधिक सुन्दर तथा अच्छा नगर था। यह एक बड़ा गुनजान बन्दरगाह था। नगर अपने पार्कों से काफी घरों तथा विशाल भवनों के लिये प्रसिद्ध था। यह नगर करेलिया प्रान्त की राजधानी था। आज यह फिनलैंड का स्मारक बना हुआ है। यह नगर मैडरिड नगर की भांति होगया है किन्तु मैडरिड आज फिर भी जीवित है और वीपुरी को फिर से एक एक ईंट जोड़ कर बनाना होगा।

तीन सौ साल पहिले रूसी सैनिकों ने इसे नष्ट किया था। फिनलैंड वाले उस घटना को अपने इतिहास में ग्रेट रैथ (भयंकर प्रकोप) के नाम से पुकारते हैं। वर्तमान युद्ध में वीपुरी फिर से बम वर्षा वाले वायुवानों द्वारा नष्ट कर डाला गया है। पहिले बार इस नगर की बर्बादी बड़े पिटर द्वारा कराई गई थी किन्तु इस बार स्टैलिन उससे कहीं आगे बढ़ गया और उसने नगर को बिलकुल तहस नहस करा दिया है।



कहा जाता है कि वीपुरी में अब भी एक घर रहने योग्य बच रहा है किन्तु वहां रहने वाला कोई नहीं है। वहां पर एक भी जीव बाकी नहीं है। कुछ पत्रों के सम्वाददाता वहां भ्रमण कर रहे थे। वे एक कुत्ते के पैर का चिन्ह बरफ़ पर देख कर बहुत अचम्भित हुए।

वीपुरी की दशा बड़ी शोचनीय हो गई है उसे देख कर रोना आता है। वहां के पुराने कैथीड्रल तथा चर्च सभी खँडहर हो गये हैं। मकानों की छतें खिड़कियां और दीवालें चारों ओर छितरायें हुये पड़े हैं। प्रधान सड़कों पर कहीं कहीं फाएइन्जिन नष्ट-भ्रष्ट खड़े दिखाई पड़ते हैं। नगर निवासियों ने नगर को बिलकुल खाली कर दिया है और वहाँ पर कोई वस्तु शेष नहीं रखा। जिस दिन नगर बिलकुल खाली कर दिया गया था उस रात भी रूसी तोपों की बौछार नगर पर हो रही थी जिससे कोई फिनिश सेना वहाँ फिर से न आ सके।

नगर को अन्तिम समय छोड़ने वालों में आलनो तुलना भी था। यह नगर का मैनेजर था। सम्वादों से पता चलता है कि जब उसने नगर की कुञ्जियों का गुच्छा सैनिक अफ़सरों को दिया तो वह बड़ा प्रसन्न तथा साहसी प्रतीत हो रहा था। उसने कई एक सम्वाद दाताओं से बतलाया है कि उसने अपने जीवन काल में किस भांति वीपुरी का प्रबन्ध किया है। प्रथम रूसी बम जब नगर पर गिरा था तो नागरिक उससे बिलकुल अनभिज्ञ थे किन्तु उसके ४८ घंटे के बाद नगर बच्चों से खाली कर दिया गया। उसके पश्चात् कमजोर, बीमार तथा बूढ़े लोग नगर के बाहर भेजे गये और बड़े दिन के अवसर पर वहां केवल १२०००

आदमी रह गये थे। यह लोग आवश्यक कार्यकर्त्ता थे जो साढ़े छ: बजे से ९ बजे सवेरे और ३ बजे से ८ बजे रात तक दफ्तरों का काम किया करते थे। रेसटोरेन्ट में कहवा आदि सूर्योदय से पहिले मिलता था और वे फिर दिन भर के लिये बन्द कर दिये जाते थे। संध्या को दिन डूबने के पश्चात् फिर खुलते थे जब कि इन स्थानों पर वीपुरी के लोगों के लिये दिन भर का भोजन दिया जाता था।

लगभग रोजाना रूसी बम वर्षाने वाले वायुयान बम वर्षा करते थे और नगर को बर्बाद करते थे। रूसी सेना ने २३ दिसम्बर को बम वर्षाना २५ मील की दूरी पर से आरम्भ किया था। जनवरी के महीने में वायुयानों द्वारा बहुत से आक्रमण किये गये। जो लोग वहां पर थे उन लोगोंने अपनी आंखों से विशाल भवनों का गिरना स्कूलों, कालेजों तथा हस्पतालों को चकना चूर होते देखा है। २० वर्ष के कठिन परिश्रम के बाद जो नगर बनाया गया था वह चकना चूर कर दिया गया। अखबारों का निकलना बन्द हो गया तो भी औरतें अपने रसोई घर, सराय और रिस्टोरेन्ट खोले रहीं। रेलवे के नौकर लोग भी अपना काम चलाते रहे। आटा पीसने की चक्कियाँ भी अपना काम करती रहीं।

आखिरकार अन्तिम सप्ताह आया और १८३ बम वर्षाने वाले वायुयानों ने अगणित बमों की वर्षा आरम्भ की। ५०० सैनिकों ने इनका सामना २४ घंटे दिन-रात करते रहे, और नगर की अग्नि बुझाने का प्रयत्न करते रहे किन्तु तो भी अग्नि का प्रकोप बढ़ता ही गया और सोवियट तोपों की आवाज धीरे-धीरे

समीप आती ही गई। इतना होने पर भी नगर प्रबन्धकर्ता हँसता ही रहा। वह अंत समय लारी पर चढ़ते और नगर को छोड़ते हुए भी हँसता रहा। उसने पत्रकारों से कहा कि "यह बात वीपुरी के लिये नई नहीं है। हमें सदैव वीपुरी को बनाना पड़ा है। युद्ध के समाप्त होने पर हम इसे फिर बनावेंगे। मैंने ही माडल ट्रेट स्कूल को बनाया था वह भी बर्बाद कर दिया गया। मैं उसे फिर बनाऊँगा। आज रात में सरहद पर युद्ध के लिये जा रहा हूँ। जब मैं लौटूंगा तो फिर अपना काम करूँगा।"

पत्रकारों ने प्रबन्धकर्ता से पूछा कि क्या वायुयानों के आक्रमण द्वारा बहुत से लोग मारे गये हैं? प्रबन्धकर्ता ने उत्तर दिया कि कुल ३०० से कुछ कम लोगों की जानें गई हैं। एक रोज २००० बम बर्षाये गये थे उसमें केवल ८ आदमी मरे थे।

इन बातों से पता चलता है कि फिनलैण्ड के निवासी बड़े बहादुर हैं। उन्हें इस बात का घमंड है कि जब रूसी लोग उनके देश पर अपना अधिकार जमावेंगे तो वे उनकी किसी भी वस्तु पर अधिकार नहीं जमा सकते।

देश दर्शन

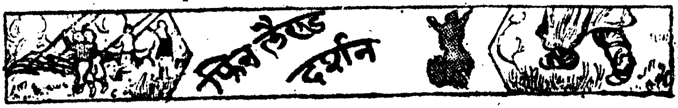
वर्तमान फिनिश युद्ध के समय फिनलैंड की दशा

वर्तमान समय में फिनलैण्ड के स्त्री, पुरुष, बूढ़े तथा बच्चे सभी बड़ी उत्सुकता तथा दिलेरी के साथ रूसियों का सामना कर रहे हैं। फिनिश जहाजों में इस समय कैप्टन और बड़े अफसरों को छोड़ कर और सभी कार्यों का कर्त्ता धर्त्ता वहां की लोट्टास स्त्रियां हैं। जहाजों में मल्लाही का काम स्त्रियां करती हैं।

फिनलैंड की लोट्टा स्त्रियां लोट्टा स्वार्ड समाज की हैं। लोट्टा-स्वार्ड नामक बहादुर स्त्री ने फिनलैंड के स्वतंत्रता के युद्ध में बहुत बड़ा भाग लिया था। उस समाज की ८५,००० स्त्रियाँ काम कर रही हैं। फिनलैण्ड की जनसंख्या के अनुसार लोट्टा स्त्रियाँ वहाँ एक बड़ी संख्या में हैं। उनके काम करने के कारण फिनलैण्ड के ८५,००० मर्द सैनिक युद्ध के लिये खाली हो गये हैं।

हंगेरियन तथा फिनिश ये दोनों योरुप की सब से अधिक मजबूत जातियाँ हैं। यदि इन दोनों जातियों का अध्यन किया जाय तो प्रतीत होगा कि ये दोनों जातियाँ बहुत सी बातों में एक दूसरे से मिली हुई हैं। सारा संसार आज फिनलैण्ड के युद्ध को उत्साह पूर्वक देख रहा था किन्तु यदि फिनलैंड की दशा वहां जा कर देखी जाय तो प्रतीत होगा कि वहाँ फिनशि लोगों को बड़े बड़े कष्ट सहन करने पड़े हैं।

हेल्सिंकी नगर एक बड़ा नगर है वहाँ पर विशाल भवन बने हुए हैं। आजकल वहां कड़ाके की सर्दी पड़ रही है। इस समय



हेल्सिंकी का ताप जल जमाने वाले प्वाइन्ट से कहीं नीचे हैं। आजकल वहाँ दिन में २ घंटे से कुछ ही अधिक समय तक प्रकाश रहता है। गर्मी के दिनों में भी संध्या समय वहाँ कड़ी सर्दी पड़ती है किन्तु गर्मी की ऋतु वहाँ बड़ी सुहावनी होती है। हेल्सिंकी हार्बर के समीप फूलों तथा फलों का एक विशाल बाजार है जहाँ पर भांति भांति के फल तथा फूल मिलते हैं।

उत्तर की ओर रूसी तथा स्वीडिश भाषा का प्रयोग बहुत कम है यद्यपि स्वीडिश भाषा फिनलैंड की दूसरी सरकारी भाषा है। फिनिश भाषा का प्रयोग वहां की लकड़ी के बने झोपड़ों में रहने वाली जनता करती है। शीतकाल में लोग स्ली गाड़ियों पर निकलते हैं और रेन्डियरों के झुंड अपनी खुराक की खोज में घूमने लगते हैं।

लोट्टास स्त्रियाँ सभी प्रकार की नौकरियों में काम करती हैं। वे अपनी शीतकाल की ऋतु दक्षिणी फ्रान्स अथवा मिस्र में जा कर व्यतीत किया करती थीं किन्तु अब की साल वे भूरे रंग के यूनीफार्म पहिने हुए अपने देश की रक्षा रूसियों के विरुद्ध कर रही हैं।

हेल्सिंकी नगर में बिलकुल अँधेरा है वहाँ प्रकाश नहीं होता। जो लोग वहां कार्य वश अपने घर ठीक समय पर रात को वापस नहीं हो सकते और अधिक रात गये वापस जाते हैं वे प्रत्येक २०० गज पर चमकती हुई बिजली की रोशनी द्वारा रोके जाते हैं। इन टार्चों को यही लोट्टास स्त्रियाँ लिये रहती हैं और नगर का पहरा देती हैं। इन स्त्रियों के हाथ बड़े शक्तिशाली तथा

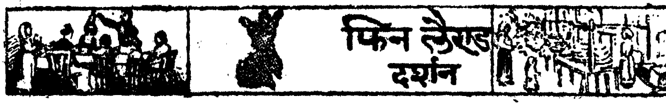
मजबूत प्रतीत होते हैं। यदि कोई व्यक्ति मार्ग भूल जाता है तो ये स्त्रियाँ उसे उसके स्थान पर पहुँचा देती हैं।

दिन के समय ये स्त्रियाँ पब्लिक बिल्डिंग्स की रखवाली करती हैं। ये सैनिक मोटर लारियों को चलातीं, रेलों को खाली करतीं और कभी कभी आग बुझाने वालों का भी काम करती हैं। बहुत सी लोट्टास स्त्रियां रूसियों की गोली का शिकार भी बन चुकी हैं। एक दिन एक सैनिक लारी चलाने वाली लोट्टास स्त्री ड्राइवर के दाहिने टांग में गोली लगी किन्तु तो भी वह स्त्री बहादुरी के साथ लारी चलाती रही जब तक कि रक्तपात के कारण वह मूर्छित नहीं हो गई।

फिनलैण्ड के पुरुष भी अजीब हैं। वे लगभग एक ही सूरत शकल के मालूम होते हैं। प्रोफेसर, डाक्टर, अर्थशास्त्र के जानने वाले, विज्ञानी आदि सभी युद्ध क्षेत्र में युद्ध के लिये डटे हैं।

फिन लोगों का मुख्य हथियार उनका ६ इञ्च का चाकू है। यह लोग बड़े कोमल प्रकृति के होते हैं किन्तु जब इनके कोप आ जाता है तो चाकू लेकर मारने दौड़ते हैं। फिनिश सैनिक अपने चाकू और स्की जूतों के साथ संसार के किसी भी सैनिक का सामना अपनी भूमि पर कर सकता है। रूसी लोगों को स्की पर चलने का अभ्यास नहीं है। जिन लोगों ने फिन लोगों को स्की पर चलते देखा है वही उसकी उस पर चलने की चतुरता समझ सकते हैं।

★ ★ ★



फिनिश सेना की वापसी

रूस से संधि होने के कारण १५ मार्च को दोपहर के पश्चात् फिनलैण्ड की सेना ने (जो २०० मील लम्बी फिनलैंड की सीमा में फैली हुई थी) अपनी वापसी आरम्भ किया। जब फिनिश सेना ४½ मील हट गई तो रूसी सेना ने फिनलैंड द्वारा दी हुई भूमि में प्रवेश करना आरम्भ किया।

जो प्रदेश फ़िनलैंड ने संधि के अनुसार रूस को दे दिया है उस प्रदेश के निवासी उसे छोड़ कर चले जा रहे हैं, केवल एक प्रतिशत केरेलिया प्रान्त के निवासियों ने रूसी साम्राज्य के आधीन रहना स्वीकार किया है। लोगों को हटाने और उनका सामान ढोने के लिये फिनिश सरकार मोटर बसों तथा रेलों का प्रयोग कर रही है। शिनिश सरकार ने डाक्टरों और दवाओं के लिये अपील की है जिससे खाली किये जाने वाले प्रदेश के निवासियों की सहायता हो सके।

जैसे ही ढाए हुई वीपुरी नगर में लाल सेना का प्रवेश हुआ वैसे ही ४ लाख फिनिश लोगों ने अपने स्थान को छोड़ कर अपने नए घरों के लिये रवाना हो गये। इन लोगों के घर छोड़ते समय का दृश्य बड़ा रोमांचकारी था। मातायें अपने रोते-बिलखते बच्चों को लिये गाड़ियों, बसों, मोटर लारियों, स्लेज गाड़ियों आदि पर अपने सामान लादे पश्चिम की ओर विदा हुई। वीपुरी से पश्चिम जाने वाली सड़क तरह तरह की सवारियों और गाड़ियों से भरी हुई थी। यद्यपि किसी मनुष्य

को घर छोड़ने पर विवश नहीं किया गया और न किसी पर किसी प्रकार की सख्ती ही की गई तो भी जो प्रान्त रूस को दिये गये हैं उनकी केवल एक प्रतिशत जनसंख्या वहां रहने के लिये तयार है।

फिनिश सरकार ने अपने देश की सभी मोटरों, बसों, लारियों गाड़ियों और घोड़ों को विवश किया है कि वे सभी लोगों की सहायता मकान छोड़ने में करें। नई सीमा के १५ मील के भीतर वाले सभी घोड़ों तथा गाड़ियों को सामान ढोने के लिये विवश किया गया है। देश की सभी रेलगाड़ियों को सामान ढोने के लिये इधर उधर दौड़ना पड़ रहा है।

जब रूसी सेना वीपुरी में पहुँची तो उसने नगर को बिलकुल खाली पाया। वीपुरी नगर के फरनीचर, दरियां और दूसरे सामानों को हटाने में वीपुरी के सभी नागरिक तीन दिन लगातार ढोते रहे। वीपुरी की छोटी से छोटी दूकान भी बिलकुल खाली कर दी गई है। लडोगा झील के पश्चिमी प्रान्त में ५०,००० गायों, घोड़ों और सुवरों को स्थान खाली करने के लिये हटाना पड़ा है। फिनिश सेना इस प्रकार थक गई है कि सैनिकों को संधि के अनुसार ५ मील रोजाना चलना बहुत कठिन हो रहा है। एक अफसर ने १०० सैनिकों को जो आराम के लिये ठहरे थे मरा हुआ पड़ा पाया।

हैंगो का खाली किया जाना

हाँगो के सभी निवासी और उनके सामान हटाये जा रहे

हैं। लारियां उन्हें फिनलैंड के भीतरी प्रदेश की ओर ढोने का कार्य कर रही हैं। खाली करने का कार्य बड़ी चतुरता तथा होशियारी के साथ किया जा रहा है प्रत्येक गांव का सामान और निवासी एक साथ एक ही स्थान को पहुँचाये जा रहे हैं।

रूसी सेना भी नाउटसी (Nautsi) और सैला (Salla) सीमा से हटते समय बड़ी प्रसन्न है। वह खेल गाने बजाने आदि से। अपनी खुशी का प्रदर्शन कर रही है। इन्हीं सीमाओं पर रूसी सेना को अधिक कष्ट उठाना पड़ा है और उसको अधिक हानि भी हुई है।

रूस और फिनलैण्ड की संधि

युद्ध के बाद रूस और फिनलैंड के बीच में जो सन्धि हुई उसके अनुसार रूस की सब शर्तें मान ली गईं। समस्त कारेलियन स्थल संयोजक, वीपुरी शहर, वीपुरी की खाड़ी और इसके द्वीप लेडोगा झील के उत्तर और पश्चिम का प्रदेश (इसमें काकी साल्मी सोर्टा वाला और सुओजायर्वी नगर शामिल हैं) मार्काजा-यर्वी और कुओलाजायर्वी के उत्तर का प्रदेश और फिनलैण्ड की खाड़ी के कुछ द्वीप रूस को मिल गये। हाँगो और उसके पड़ोस के प्रदेश फिनलैण्ड के प्रजातंत्र प्रायद्वीप ने वार्षिक ८० लाख फिनिश मार्क के बदले ३० वर्ष के लिये रुस को लीज (किराये) पर दे दिया यहां रूस अपना फौजी अड्डा (बेस) बनायेगा।

उत्तर के पेटसामो प्रदेश में समुद्र में फिनलैण्ड अपनी रक्षा के लिये १०० टन से अधिक बड़े लड़ाका जहाज नहीं रक्खेगा। पेटसामो में होकर रूसी नागरिक आजादी के साथ नार्वे को जा सकेंगे। इसी प्रकार रुस और स्वीडन के बीच वाले प्रदेश में भी रूसियों को आने जाने की पूरी आजादी रहेगी। सुविधा के लिये १९४० में कन्दालकशा और कामीजायर्वी के बीच में एक रेलवे बनाई जायगी।

१७—यूगोस्लेविया, १८—ग्रीस, १६—इटली, २०—स्पेन, २१—पुर्तगाल, २२—जर्मनी, २३—हंगारी, २४—स्वीज़रलैंड, २५—चेकोस्लोवेकिया, २६—अल्सेस लारेन।

अफ्रीका—१—मिस्र, २—सूडान, ३—एबीसीनिया, ४—जेंजीबार और पम्बा, ५—मेडेगास्कर, ६—कीनिया ७—यूगांडा, ८—पूर्वी पुर्तगाली अफ्रीका, ६—बेल्जयन कांगो, १०—रोडेशिया, ११—दक्षिणी अफ्रीका, १२—पश्चिमी पुर्तगाली अफ्रीका, १३—नाइजीरिया, १४—सहारा, १५—मरक्को, १६—अल्जीरिया, १७—ट्यूनिस, १८—ट्रिपली, १६—लाइबेरिया, २०—मारीशस द्वीप।

उत्तरी अमरीका—१—कनाडा, २—न्यूफाउंडलड; ३—संयुक्त राष्ट्र अमरीका, ४—मेक्सिको, ५—पनामा, ६—मध्य अमरीका, ७—पश्चिमी द्वीपसमूह।

दक्षिण अमरीका—१—कोलम्बिया, २—गायना, ३—वेनिज़्वेला, ४—इक्वेडार, ५—पीरू, ६—बोलिविया, ७—चिली, ८—पेरेग्वे, ६—यूरुग्वे, १०—ब्रेज़ील, अर्जेन्टाइना।

आस्ट्रेलिया—१—आस्ट्रेलिया, २—टस्मेनिया, ३—न्यूज़ीलैंड, ४—न्यूगिनी, ५—फिजी द्वीप, ६—प्रशान्त महासागर के द्वीप।

अन्वेषक—१—मार्कोपोलो, २—कोलम्बस, ३—वास्को डिगामा, ४—कुक, ५—लिविंग्सटन, ६—स्टैनली, ७—ड्रेक, ८—स्वेन हेडिन, ६—लारेंस, १०—पियरी, ११—नान्सेन।

नगर—१—प्रयाग, २—कलकत्ता, ३—बम्बई, ४—बनारस, ५—मद्रास, ६—लाहौर, ७—लन्दन, ८—पेरिस, ६—बर्लिन, १०—मास्को, ११—न्यूयार्क, १२—टोकियो, १३—बग़दाद, १४—क़ाहिरा, १५—यरूशलम, १६—मक्का, १७—पेकिंग १८—हांगकांग।

नदी—गंगा, यमुना, सिन्ध, नर्मदा, गोदावरी, महानदी, ब्रह्मपुत्र, इरावदी, यांग्ज़ी, ह्वांग हो, अमूर, दजला-फ़रात, वाल्गा, राइन, डेन्यूब, मिसीसिपी, एमेज़न, नील, कांगो, सेन्ट लारेंस।

पर्वत—हिमालय, अल्प्स, एँडीज़, राकी।

नहर—स्वेज़, पनामा, चीन की शाही नहर (ग्रांड केनाल)।

कारबार—कागज़, लोहा, दियासलाई, मोटर, पेन्सिल, मिट्टी का तेल, पुतलीघर, जहाज, रेल, हवाई जहाज़।

सभ्यता—वैदिक, एसीरियाई, प्राचीन मिस्री, इन्का, माया, यूनानी, रोमन।

अग्रिम मूल्य एक प्रति का ।=), वार्षिक ४)रु०, समस्त पुस्तक माला का ४०)रु०।

DESH-DARSHAN Regd. No. A—
March 1940

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.)
and Printed by R. S. Misra, at the Bhugol Press,
243, Jamuna Road, Allahabad.